Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24 website- www.dvpnews.in रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 260 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, मंगलवार 08 अप्रैल 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जीवन का एकमात्र उद्देश्य यह है कि जैसे हैं वैसे दिखे और जैसे बन सकते हैं, वैसे बनें।
The only aim of life is that we should look like we are and we can be like we are.
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

वक्फ कानून को चुनौती मामला

याचिकाओं पर सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट ने जताई सहमति

नई दिल्ली (आरएनएस)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं को सूचीबद्ध करने पर विचार करने पर सहमति दे दी है। मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली पीठ ने जमीयत उलेमा-ए-हिंद की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल की दलील पर गौर किया जिसमें उन्होंने कहा कि याचिकाएं बेहद अहम हैं और इन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए।प्रधान न्यायाधीश ने कहा, मैं दोपहर में उल्लेख पत्र देखूंगा और निर्णय लूंगा। सूचीबद्ध करेंगे।

संसद द्वारा शुक्रवार को वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2025 पारित किए जाने के तुरंत बाद संशोधनों को चुनौती देते हुए शीर्ष अदालत में कई याचिकाएं दायर की गई हैं। संसद के दोनों सदनों में विधेयक पारित होने के बाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने घोषणा की कि वह वक्फ (संशोधन) विधेयक को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती देगी। कांग्रेस ने दावा किया कि यह संविधान के मूल ढांचे पर हमला है और इसका उद्देश्य धर्म के आधार पर देश को ध्रुवीकृत और विभाजित करना है।

छत्तीसगढ़ की नई धमनी बनेगी खरसिया-परमलकसा 5वीं-6वीं रेल लाइन, मिलेगा बंपर रोजगार : रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव

छत्तीसगढ़ के विकास के लिए खरसिया-परमलकसा रेल परियोजना एक ऐतिहासिक कदम : मुख्यमंत्री साय

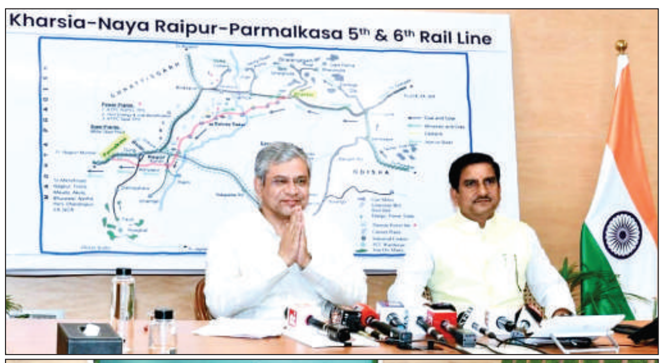

रायपुर (विश्व परिवार)। केंद्रीय कैबिनेट की ओर से मंजूर खरसिया-नया रायपुर-परमलकसा रेल प्रोजेक्ट के बारे में रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सोमवार को रेल भवन में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि यह प्रोजेक्ट छत्तीसगढ़ की रेल कनेक्टिविटी को बदलने वाला है। इस प्रोजेक्ट पर 8741 करोड़ रुपये की लागत आएगी और इससे पूरे छत्तीसगढ़ को एक छोर से दूसरे छोर तक कवरेज मिलेगा। रेल मंत्री ने कहा कि खरसिया-परमलकसा 5वीं-6वीं रेल लाइन छत्तीसगढ़ में रेल नेटवर्क की नई धमनी की तरह है। यह ओडिशा की सीमा से महाराष्ट्र की सीमा तक रेल नेटवर्क की सुविधा प्रदान करेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए रेल मंत्री ने कहा कि यह भारत के सबसे बड़े प्रोजेक्ट में से एक है। इससे छत्तीसगढ़ के रायगढ़, जांजगीर चाँपा, बिलासपुर, बलौदा बाजार, दुर्ग और राजनांदगांव जैसे जिले जुड़ेंगे। इसके तहत 21 स्टेशन बनेंगे, 48 बड़े ब्रिज और साथ ही 349 माइनर ब्रिज, 14 फ्लाईओवर और 184 अंडर पास का निर्माण होगा। स्थानीय स्तर पर निवासियों को दिक्कत ना हो इसके लिए 5 रेल फ्लाईओवर भी निर्मित किए जाएंगे।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि इस प्रोजेक्ट में 278 किलोमीटर रूट में 615 किलोमीटर लंबी पटरियां बिछाई जाएंगी। इस रूट के निर्माण के बाद 8 से ज्यादा मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों का संचालन किया जाएगा। इस रेल नेटवर्क के निर्माण से करीब 22 करोड़ लीटर डीजल बचेगा और रेलवे को लगभग 2500 करोड़ रुपये के डीजल की बचत होगी। रेल मंत्री ने कहा कि भगवान राम के वनवास के दौरान माता शबरी के प्रसंग से जुड़े लक्ष्मी नारायण मंदिर का भी इस रेल नेटवर्क से संपर्क स्थापित होगा। बलौदा बाजार और खरसिया जैसे सीमेंट उत्पादन के बड़े इंडस्ट्रियल हब भी इस नेटवर्क से जुड़ेंगे।

श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि स्थानीय लोगों की सुविधा के लिए रेलवे अब बायपास पद्धति को अपना रही है। इसके तहत मालगाड़ी को शहर के बाहर से निकालने पर जोर दिया जा रहा है। वहीं यात्री गाड़ियों को शहर के अंदर एंट्री दी जाएगी। इस रेल लाइन के निर्माण के दौरान भी इस पर फोकस रहेगा। साथ ही छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत कोसा सिल्क के उत्पादन वाले इलाके भी रेल लाइन के जरिए जुड़ेंगे। इसके चलते 2 करोड़ मानव दिवस रोजगार उत्पन्न होगा।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ का रेलवे बजट अब 22 गुना बढ़कर लगभग 6900 करोड़ से ज्यादा हो गया है। साथ ही 2014 के बाद छत्तीसगढ़ में रेलवे के काम में अभूतपूर्व तेजी आई है। इसके तहत 1,125 किलोमीटर नए ट्रैक बने हैं, जोकि दुबई के पूरे रेलवे नेटवर्क से ज्यादा है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में रेलवे का कुल निवेश 47 हजार करोड़ से अधिक है। इसके तहत 32 स्टेशनों का पुनर्निर्माण हो रहा है, और इन्हें पूरी तरह नया बनाया जा रहा है। इनमें से कई स्टेशनों के विकास का कार्य इस साल के अंत तक पूरा हो जाएगा।

राज्य के महत्वपूर्ण रेल प्रोजेक्ट्स की जानकारी देते हुए रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि दल्लीराजहरा से रावघाट नई लाइन पूरी होने वाली है। अब इसके आगे रावघाट से जगदलपुर रेल लाइन के डीपीआर बनाने का काम लगभग पूरा हो गया है। वैसे ही गेवरा-पेन्ड्रा रोड नई लाइन पर भी तेजी से काम चल रहा है। -शेष पेज 5 पर

रेलवे और छत्तीसगढ़ की तस्वीर बदलेगी: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि जब से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार आई है, छत्तीसगढ़ में रेलवे से जुड़ा हजारों करोड़ का काम हो रहा है। नई परियोजना से छत्तीसगढ़ के अनेक जिले जुड़ते हैं, यह राज्य के लिए सौभाग्य की बात है। स्टेशनों के विकास के लिए सरकार ने करोड़ों का फंड दिया है, इससे रेलवे और छत्तीसगढ़ की तस्वीर बदलेगी।

मुख्यमंत्री साय ने जशपुर जिले के 63 करोड़ रूपए से अधिक लागत के विकास कार्यों की दी सौगात

59.75 करोड़ रूपए के 22 कार्यों का शिलान्यास, 3.64 करोड़ रूपए की लागत के पांच कार्यों का लोकार्पण

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने जशपुर जिले को 63 करोड़ से अधिक के विकास कार्यों की सौगात दी। उन्होंने जिला मुख्यालय जशपुर में आयोजित कार्यक्रम में 59.75 करोड़ रुपये के 22 कार्यों का भूमिपूजन और 3.64 करोड़ रुपये के 5 कार्यों का लोकार्पण किया। इनमें जय स्तंभ चौक के सौंदर्यीकरण, छात्रावासों के निर्माण, सामुदायिक भवन, कम्पोस्ट सेंटर और आरआर सेंटर जैसी जनोपयोगी परियोजनाएं शामिल हैं। मुख्यमंत्री द्वारा भूमिपूजन किए गए कार्यों में नगर पालिका परिषद, पुलिस विभाग, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल और पंचायत एवं ग्रामीण सड़क विकास विभाग से जुड़े 22 महत्वपूर्ण विकास कार्य सम्मिलित हैं। इनमें बीटी रोड, सीसी रोड, नालियों और स्टॉर्म वॉटर ड्रेन, सामुदायिक भवन, सिवरेज ट्रीटमेंट प्लांट, स्ट्रीट लाइट विस्तार, तालाब और पार्क उन्नयन, छात्रावास भवन और सड़क निर्माण कार्य प्रमुख हैं।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने जशपुर के जय स्तंभ चौक में 23 लाख 86 हजार की लागत से कराये गए सौन्दर्यीकरण और उन्नयन कार्य का लोकार्पण किया। भारत के स्वतंत्रता दिवस की यादगार के रूप में स्थापित जय स्तंभ चौक का उन्नयन कार्य किया गया है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि जय स्तंभ चौक वर्षों तक आने वाली पीढ़ियों को हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के त्याग बलिदान और राष्ट्र भक्ति की प्रेरणा देता रहेगा, राष्ट्रसेवा हेतु सभी को प्रेरित करता रहेगा। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि यह परियोजनाएं जशपुर जिले के समग्र विकास और नागरिकों की सुविधाओं में उल्लेखनीय वृद्धि करेंगी। उन्होंने सभी कार्यों को गुणवत्तापूर्ण और समयबद्ध रूप से पूर्ण करने के निर्देश भी दिए।

मुख्यमंत्री ने कैंसर डिटेक्शन वैन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के निर्देशानुसार जशपुर जिला प्रशासन और बालको मेडिकल सेंटर, रायपुर के संयुक्त तत्वाधान में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग द्वारा 07 एवं 08 अप्रैल 2025 को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कुनकुरी में निःशुल्क रक्त एवं कैंसर रोग परामर्श शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज सीएम कैंप कार्यालय बगिया से मोबाइल कैंसर डिटेक्शन वैन को झंडी दिखाकर रवाना किया गया। कैंसर डिटेक्शन वैन के माध्यम से जशपुर जिले में कैंसर सम्भावित मरीजों का जाँच एवं उपचार 7 एवं 8 अप्रैल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कुनकुरी में निःशुल्क उपलब्ध रहेगा।

दंतेवाड़ा में लोन वर्राटू अभियान का असर

तीन इनामी नक्सली सहित कुल 26 नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

दंतेवाड़ा (विश्व परिवार)। दंतेवाड़ा जिले में चलाए जा रहे नक्सल उन्मूलन अभियान लोन वर्राटू (घर वापस आइए) और राज्य सरकार की पुनर्वास नीति के प्रभाव से तीन इनामी नक्सली सहित कुल 26 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर दिया है। यह आत्मसमर्पण सात अप्रैल को दंतेवाड़ा के डीआरजी कार्यालय में हुआ। आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों में विभिन्न संगठनों के सक्रिय सदस्य शामिल हैं, जो नक्सलवाद की हिंसा, शोषण और जंगल में कठिन जीवन से तंग आकर मुख्यधारा में शामिल होने का फैसला लिया।

जिला पुलिस बल और सीआरपीएफ द्वारा लगातार संपर्क, संवाद और सरकार की पुनर्वास नीति के व्यापक प्रचार-प्रसार के जरिए नक्सलियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। इस अभियान के तहत अब तक 224 ईनामी सहित कुल 953 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है। आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों में एक आमदई एरिया जनमिलिशिया कमांडर, एक गमपुर आरपीसी जनताना सरकार अध्यक्ष, 20 बेचापाल आरपीसी मिलिशिया, सीएनएम और डीएकेएमएस सदस्य, तीन केशकुतुल आरपीसी मिलिशिया और डीएकेएमएस सदस्य और एक गुड़से आरपीसी डीएकेएमएस सदस्य है। आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को छत्तीसगढ़ सरकार की नवनिर्मित पुनर्वास नीति के तहत 50 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाएगी।

बेगूसराय में 'पलायन रोको नौकरी दो' पदयात्रा में शामिल हुए राहुल गांधी

बेगूसराय (आरएनएस)। बिहार में विधानसभा चुनाव के भले ही अक्टूबर-नवंबर में होने की संभावना है, लेकिन कांग्रेस ने अभी से ही अपनी खोई जमीन की तलाश शुरू कर दी है। कांग्रेस सांसद और पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी लगातार बिहार दौरे पर आ रहे हैं। सोमवार को भी वह बिहार पहुंचे और बेगूसराय में पलायन रोको नौकरी दो यात्रा में शामिल हुए। बेगूसराय में राहुल गांधी के पहुंचने के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ गया। पदयात्रा में राहुल गांधी के साथ हजारों कांग्रेस नेता, कार्यकर्ता और समर्थकों ने भाग लिया। राहुल गांधी की अपील पर कांग्रेस के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने सफेद टी-शर्ट पहनकर पदयात्रा में भाग लिया।

बेगूसराय के आईटीआई मैदान से पलायन रोको रोजगार दो पदयात्रा शुरू की गई। मौके पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं की भी भीड़ नजर आई। इधर, कांग्रेस पार्टी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, नेता विपक्ष राहुल गांधी ने आज पलायन रोको, नौकरी दो यात्रा में कदमताल कर यात्रा के संदेश को मजबूती के साथ बुलंद किया। बिहार के युवाओं को पलायन नहीं, उन्हें खुद के प्रदेश में रोजगार मिले- ये हमारी यात्रा का लक्ष्य है। ये यात्रा बिहार के संघर्ष की आवाज और उम्मीद है। हम वर्षों से अन्याय झेल रहे राज्य के नौजवानों को न्याय का हक दिलाकर रहेंगे। कांग्रेस ने एक अन्य पोस्ट में लिखा, पलायन रोको-नौकरी दो यात्रा में हम बिहार के युवाओं की हुंकार लिए आगे बढ़ रहे हैं। बेरोजगारी, महंगाई, पेपर लीक और पलायन के खिलाफ हमारी ये लड़ाई, युवाओं को न्याय दिलाने तक जारी रहेगी।

सुशासन तिहार 2025 : प्रथम चरण में 8 से 11 अप्रैल तक रायपुर नगर निगम के सभी 70 वार्डों में आम जनता से समस्याओं के संबंध में प्राप्त किये जाएंगे आवेदन

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के निर्देशानुसार प्रदेश में सुशासन तिहार 2025 का आयोजन किया जा रहा है। यह 8 अप्रैल से 31 मई 2025 तक 3 चरणों में आयोजित होगा। कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह ने आज इस संबंध में बैठक ली। उन्होंने कहा कि प्राप्त होने वाले आवेदनों को गंभीरता से ले और गुणवत्तापूर्ण समाधान करना सुनिश्चित करें।

कलेक्टर ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में, ग्राम पंचायतों में और नगरीय क्षेत्रों में वार्डवार समाधान पेटी रखी जाएगी, जिसमें आम जनता अपनी समस्या संबंधी आवेदन डाल सकेंगे। साथ ही यह आवेदन ऑनलाईन पोर्टल sushasantihar.cg.nic.in के माध्यम से भी किये जा सकेंगे। गौरतलब है कि, सुशासन तिहार के निरीक्षण के लिए अनुविभाग स्तर पर 10 सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया है। साथ ही नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। सभी अनुविभागों में आज इस संबंध में कर्मचारियों को प्रशिक्षण भी दिया गया। जनता को आवेदन लिखने में सहायता के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई जाएगी।

कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने दिए निर्देश- सभी आवेदनों को गंभीरता से लें, गुणवत्तापूर्ण निराकरण करें

रायपुर नगर निगम में कल से वार्डों में लिए जाएंगे आवेदन- रायपुर नगर पालिक निगम के सभी 10 जोनों के समस्त 70 वार्डों में सार्वजनिक स्थलों पर आवेदन प्राप्त करने और सम्बंधित आवेदकों को पावती देने का कार्य किया जाएगा। सभी 70 वार्डों में आमजनों से समस्याओं के आवेदन प्राप्त करने प्रथम चरण में दिनांक 8 से 11 अप्रैल 2025 तक सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक होने वाले आयोजन में सभी स्थलों पर आमजनों के लिए समाधान पेटी की व्यवस्था की गई है, ताकि लोग अपनी समस्याएं और शिकायतें निःसंकोच लिखकर उसमें डाल सकें।

संक्षिप्त समाचार

महावीर जन्मोत्सव जैन समाज द्वारा जूलुस व कार्यक्रमों की तैयारी

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। बलौदाबाजार जैन समाज महावीर जयंती के उपलक्ष में सामाजिक मीटिंग रखी गई जिसमें समाज के अध्यक्ष दिनेश जैन सचिव अमित जैन नगर पालिका के अध्यक्ष श्री अशोक जैन उपाध्यक्ष प्रवीण जैन संजय जैन मिश्रीलाल जैन मंदिर नवनिर्माण अध्यक्ष दिलीप जैन पवन जैन संदीप जैन मितेंद्र जैन गोलू जैन नरेंद्र जैन सुरेश जैन युवराज जैन समाज के कोषाध्यक्ष धीरज जैन ऋषभ जैन व महिला मंडल से अध्यक्षा सुमन जैन सचिव डिंपल जैन बीना जैन साधना जैन ममता जैन अनीता जैन संगीता जैन श्वेता जैन नेहा जैन ज्योति जैन व बड़ी संख्या में समाज उपस्थित था जैन समाज की मीटिंग में निर्णय लिया गया कि समाज की सभी प्रतिष्ठाने बंद रहेगी। महावीर जयंती का जुलूस भगवान महावीर जी को रथ में विराजमान किया जाएगा जुलूस बाजे गाजे के साथ मंदिर जी से शिशु मंदिर गांधी चौक चर्च रोड से होते हुए बजरंग चौक नेहरू चौक से मंदिर जी में संपन्न होगा। जुलूस में पंथी नृत्य का भी आयोजन किया जाएगा मंदिर जी में भगवान की स्थापना के बाद उनका मंत्रों पचार से कलश कर स्थापित किया जाएगा महिलाओं द्वारा भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भगवान जी के जन्मोत्सव में झूला झूलाने का कार्यक्रम आदि किया जाएगा महावीर जन्मोत्सव पर समाज में खुशी एवं उत्साह का माहौल दिखाई दे रहा था।

अंबुजा विद्यापीठ के व्याख्याता व कोऑर्डिनेटर थानेश्वर वर्मा को डॉक्टरेट की उपाधि मिली

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानन्द तकनीकी विश्वविद्यालय भिलाई ने गणित के विषय मे शोध कार्य

प्रस्तुत करने पर थानेश्वर लाल वर्मा को डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की है. डॉ थानेश्वर लाल वर्मा ने भिलाई इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी के प्रो.डॉ डी के गंगेश्वर के मार्गदर्शन मे ए स्टडी ऑफ़ क्यूईन्ग थ्योरी एंड इट्स एप्लीकेशन्स विषय पर अपना शोध कार्य तकनीकी विश्वविद्यालय मे प्रस्तुत किया था जिस पर 5अप्रैल को डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान करने का आदेश जारी किया गया. उनकी इस सफलता पर विद्यालय के प्राचार्य एस के पाण्डेय सहित विद्यालय के सभी सहकर्मी अध्यापकों ने प्रसन्नता जाहिर की व उन्हें बधाई दी. विदित हो कि थानेश्वर लाल वर्मा विगत 33 वर्षों से अंबुजा विद्यापीठ मे व्याख्याता व को ऑर्डिनेटर के रूप मे कार्यरत हैं. इन्होने अध्यापन कार्य करते हुए राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कांन्फ्रेंस मे 7 शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं. गणित ओलम्पियाड मे श्रेष्ठ परिणाम लाने के लिए इन्हे सम्मानित किया गया है.

आज से रिसाली में सुशासन तिहार, नागरिकों की समस्याओं का निराकरण करने 4 स्थानों पर समाधान पेटी

रिसाली (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम रिसाली क्षेत्र के 40 वार्डो में सुशासन तिहार के लिए 4 समाधान पेटी लगाए जाऐंगे। जहां पर नागरिक अपनी शिकायतों के निराकरण के लिए आवेदन कर सकते है। प्रत्येक समाधान पेटी के लिए अलग से अभियंता स्तर के अधिकारियों को नोडल बनाया गया है। नगर पालिक निगम रिसाली के प्रभारी आयुक्त एवं कार्यपालन अभियंता सुनील दुबे ने बताया कि राज्य शासन के सुशासन तिहार में नागरिक अपने जटिल एवं सामान्य शिकायतों का निराकरण कराने आवेदन कर सकते है। आवेदनों का निराकरण अधिकतम एक माह के भीतर अनिवार्य रूप से किया जाएगा। उन्होंने बताया कि पुरैना और डुण्डेरा के तीन-तीन वार्डो के लिए एक-एक समाधान पेटी और सुविधा डेस्क की स्थापना की जाएगी। वही शेष वार्डो में लिए आयुक्त कार्यालय के अलावा टंकी ऑफिस में समाधान पेटी रखने की व्यवस्था की गई है। प्रिंट फार्म के अलावा सादे कागज में फार्म लेने के लिए उन्होंने कर्मचारियों को प्रशिक्षण भी दिया।

नागरिक इस समस्या पर कर सकते है आवेदन- राशन कार्ड, प्रधानमंत्री आवास, पेंशन, सफाई, अतिक्रमण, भवन अनुज्ञा, नल कनेक्शन, पेयजल समस्या, लाईट, साफ-सफाई, मरम्मत संधारण।

आवेदन भरते समय रखे ध्यान- प्रभारी आयुक्त ने बताया कि नागरिकों को आवेदन करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि जानकारी सही भरे। अपने वार्ड का नाम और मोबाईल नंबर अवश्य दर्ज कराऐ। आवेदन निर्धारित स्थान पर प्रिंट दिया जाएगा। जानकारी स्पष्ट शब्दों में भरे। इसके अलावा शिकायत स्पष्ट शब्दों में उल्लेख करे। ताकि आवेदन का निराकरण जानकारी के अभाव में न रूके।

दी गई जिम्मेदारी- प्रभारी आयुक्त ने अधिकारी कर्मचारी की बैठक ली। उन्होंने आवेदन उपलब्ध कराने से लेकर आवेदन जमा कराने और नागरिकों को सुविधा उपलब्ध कराने के बारे में विस्तार से बताया। समाधान डेस्क के ऊपर अभियंताओं की ड्यूटी लगाई गई है।

सुशासन तिहार : नागरिको से सीधा संवाद एवं जन समस्याओं के त्वरित समाधान का सीधा माध्यम : मधुसूदन यादव

प्रथम चरण में आवेदन जमा करने वार्डो में 8 से 11 अप्रैल तक आयोजित शिविर का लाभ लेने महापौर ने की अपील

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा आम जनता को शासन की योजनाओं का लाभ देने उनसे संवाद स्थापित करने तथा उनकी समस्याओ के निराकरण के लिये सुशासन तिहार 2025 का आयोजन पूरे प्रदेश में किया जा रहा है। तीन चरण में आयोजित इस तिहार के प्रथम चरण में दिनांक 8 अप्रैल से 11 अप्रैल तक आम जनता से आवेदन प्राप्त करना है। जिसके लिये निगम सीमाक्षेत्र के 51 वार्डो में शिविर का आयोजन किया गया है।

सुशासन तिहार 2025 के संबंध में महापौर श्री मधुसूदन यादव ने बताया कि मुख्यमंत्री माननीय विष्णु देव साय जी की पहल पर शासन की जन कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा एवं विकास कार्यो में गति लाने के साथ आम जनता, जन प्रतिनिधियों और विभिन्न समाजिक संगठनों से सीधा संवाद स्थापित करने तथा आम जनता की समस्याओ का समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित करने प्रदेश में सुशासन तिहार का आयोजन तीन चरण में किया जा रहा है। प्रथम चरण में 8 से 11 अप्रैल तक आम जनता से आवेदन प्राप्त किये जायेगे। दूसरे चरण में लगभग 1 माह के भीतर प्राप्त आवेदनों का निराकरण किया जायेगा एवं तीसरे व अंतिम चरण में 5 मई से 31 मई के बीच समाधान शिविर आयोजित किये जायेगे। उन्होंने नागरिको से अपील की है कि शासन की योजना का लाभ लेने एवं अपनी समस्याओं के निराकरण के लिये वार्डो में आयोजित शिविर में उपस्थित होकर अधिक से अधिक आवेदन करे।

निगम सीमा क्षेत्र के वार्डवासियो को सुशासन तिहार 2025 का लाभ देने प्रथम चरण में 8 से 11 अप्रैल तक शासन निर्देशानुसार आम जनता के समस्याओं से संबंधित आवेदन लेने नगर निगम द्वारा प्रात: 10 बजे से शाम 5 बजे तक वार्डो में शिविर आयोजित किया गया है। शिविर के सफल संचालन के लिये निगम आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा ने अधिकारियो व कर्मचारियो को दायित्व सौपा है।

निगम परिसर सहित 6 जगहों पर रखी जाएगी समाधान पेटियां

जन समस्याओं के निराकरण के लिए तीन चरणों में होगा सुशासन तिहार-2025

दुर्ग (विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देश पर शासकीय कामकाज में पारदर्शिता तथा योजनाओं और कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सुशासन तिहार का उद्देश्य आम जनता की समस्याओं का समयबद्ध निराकरण सुनिक्षित करना, शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा करना और सीधा जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनो से संवाद स्थापित करना है।तीन चरणों में आयोजित किया जावेगा। आयुक्त सुमित अग्रवाल द्वारा सुशासन तिहार-2025 के सफल क्रियान्वयन हेतु डाटा सेंटर में लेकर सभी अधिकारी/कर्मचारियो को दिशा निर्देश दिए। बैठक में अधिकारी/कर्मचारीगण मौजूद रहें।

कार्यपालन अभियंता मोहनपुरी गोस्वामी को नोडल अधिकारी एवं कार्यपालन अभियंता दिनेश नेताम को सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त कर सुशासन तिहार की प्रथम चरण दिनांक 08 अप्रैल से 11 अप्रैल 2025 के संपादन हेतु निम्नांकित अधिकारी / कर्मचारियों की ड्यूटी लगाकर जिम्मेदारी सौंपी गई है। आयुक्त द्वारा अधिकारी/कर्मचारियो को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने शासन की मार्गदर्शी निर्देशों से अधिकारियों को अवगत करते हुए। नगर निगम मुख्यालाय पेटी की स्थापना, बोरसी जोन कार्यालाय, आदित्य नगर जोन कार्यालय, चंद्रशेखर स्कूल नया पारा, उरला ज़ोन कार्यालय और महात्मा गांधी स्कूल में इन 06 जगहों पर रखी जायेगी एक-एक समाधान पेटी रखने के निर्देश दिए है, ताकि जो आवेदक प्रत्यक्ष रूप से अपना आवेदन न दे सके वे समाधान पेटी के माध्यम से अपनी समस्या बता सके। उन्होंने कहा कि इस अभियान के तहत् ऑपरेटर की भी ड्यूटी लगाई गई एवं तत्काल अभियान के बारे में उन्हे प्रशिक्षण दिया जाए। 8 अप्रैल समाधान शिविर का आयोजन समय 10 बजे से शाम 5 बजे तक किया जाएगा। शिविरों में से लोगों की समस्याओं से संबंधित आवेदन लिए जाएंगे।

सुशासन तिहार : निगम भिलाई क्षेत्र के 10 जगहो में लगाये जाएंगे शिविर

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा सुशासन तिहार 2025 चलाये जाने के निर्देश प्राप्त हुए है। नगर निगम भिलाई के 10 जगहो पर सुशासन शिविर सुबह 10 बजे से सायं 5 बजे तक लगाए जायेगे। मुख्य मुख्य कार्यालय सुपेला में हेल्प डेस्क के पास इसके साथ ही जोन-01 नेहरू नगर पानी टंकी एवं वार्ड क्रं. 18 हरा मैदान कांट्रेक्टर कालोनी, जोन-02 वैशालीनगर पानी टंकी एवं वार्ड क्रं. 24 हाउसिंग बोर्ड सूर्यकुण्ड तालाब के पास, जोन-03 मदर टेरेसा नगर पानी टंकी एवं वार्ड क्रं. 33 संतोषी पारा बैकुण्ठधाम एस.एल.आर.एम. सेंटर के पास, जोन-04 शिवाजी नगर खुर्सीपार पानी टंकी एवं वार्ड क्रं. 40 सामुदायिक भवन, जोन-05 सेक्टर 06। सुशासन तिहार का उददेश्य आम जनता की समस्याओं का समयबद्व निराकरण किया जाना है।

विधायक एवं महापौर द्वारा आकर्षक डिजाइनिंग डिवाइडर लाइट का उद्घाटन किया गया

भिलाई (विश्व परिवार)। नगर निगम भिलाई के नेहरू नगर जोन के अंतर्गत नेहरू नगर चौक से लेकर के केपीएस चौक तक आकर्षक डिजाइनिंग डिवाइडर पर लगे रेड लाइट का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर स्थानी नागरिकों में बहुत खुशी थी। इससे लाइट से सड़क की सुंदरता और बढ़ गई। विधायक वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन ने नागरिकों से कहा कि हमारी सरकार का उद्देश्य है, अच्छी से अच्छी सुविधा नागरिकों को मिले। इसीलिए यह सब आकर्षक लाइट लगाए जा रहे हैं। यह लाइट धीरे-धीरे सभी प्रमुख मार्गो पर लगाए जाएंगे। केपीएस चौक से सूर्या माल तक गौरव पथ एवं अन्य प्रमुख मार्गों पर लगेंगे।

कार्यालय, नगर पंचायत डोंगरगांव, जिला-राजनांदगांव (छ.ग.)

क्रमांक / 55/लो.नि.शा./ निविदा/न.पं./2025-26 — डोंगरगाँव, दिनांक 04/04/2025

।। मैनुअल पद्धति से निविदा आमंत्रण सूचना ।।

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निकाय क्षेत्रांतर्गत विभिन्न निर्माण कार्य संख्या **05** लागत राशि **17.00 लाख** रुपये हेतु दिनाँक 28/04/2025 को कार्यालयीन अवधि समय 3:00 बजे तक पंजीकृत डाक / स्पीड पोस्ट के माध्यम से तीन लिफाफा पद्धति पर सीलबंद निविदा प्रपत्र "ए" में प्रचलित लोक निर्माण विभाग (भवन / सड़क) **एस.ओ.आर. 01.01.2015** से प्रभावशील एवं सूचना जारी दिनांक तक संशोधित दर अनुसूची से निविदाये प्रतिशत दर पर आमंत्रित की जाती है। एक लिफाफे में टेंडर दर। दूसरे में स्व प्रमाणित समस्त दस्तावेज एवं अमानत राशि का एफ.डी.आर. तथा तीसरे लिफाफे में इन दोनों लिफाफों को भरकर इसके उपर कार्य का नाम, पाने वाले का नाम तथा प्रेषक का पूर्ण नाम/पता लिख कर जमा करना होगा।

1	निविदा प्रपत्र प्राप्त करने हेतु आवेदन करने की अंतिम तिथि एवं समय	-	21/04/2025 को शाम 04:00 बजे तक
2	निविदा प्रपत्र जारी करने की अंतिम तिथि एवं समय	-	23/04/2025 को शाम 04:00 बजे तक
3	निविदा जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय	-	28/04/2025 को दोप. 03:00 बजे तक
4	निविदा खोलने की तिथि एवं समय	-	28/04/2025 को दोप. 04:00 बजे तक

निविदा की सामान्य शर्ते, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज एवं अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि एवं समय में लोक निर्माण शाखा से अथवा वेबसाईड **www.uad.cg.gov.in** पर देखी / प्राप्त की जा सकती है।
"अपने घर, आसपास एवं नगर को स्वच्छ रखे, शौचालय का उपयोग करें"
"जल ही जीवन है"

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पंचायत डोंगरगांव
जिला- राजनांदगांव (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि **छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा, दीनदयाल आवास योजनातंर्गत खम्हारडीह, रायपुर** में स्थित **एल.आई.जी. फ्लैट क्र. 588 ब्लॉक नं-25, (प्रथम तल),** को इस कार्यालय के नामांतरण आदेश **क्रमांक 472 दिनांक 28.09.2011** के द्वारा **श्रीमती मनीषा धानोरकर पति श्री जगदीश धानोरकर,** के नाम पर नामांतरित किया गया है।

वर्तमान में नामांतरी **श्रीमती मनीषा धानोरकर पति श्री जगदीश धानोरकर, निवासी:- 139, दत्तात्रय नगर, एन.आई.टी गार्डन के पास, नागपुर (महाराष्ट्र)** के द्वारा उक्त फ्लैट को क्रेता **श्री अखिलेश जॉय पिता स्व. के. एस. जॉय, निवासी: मकान नं- बी/3, सेल्स टैक्स कॉलोनी, खम्हारडीह, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना विक्रय इकरारनामा, विक्रय विलेख, शपथ पत्र एवं अन्य दस्तावेज के साथ आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त फ्लैट के विक्रय करने के सबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी,छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर प्रथम एवं पंचम तल
व्यवसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27 नवा रायपुर, अटल नगर
फोन नं.-0771-4016094 E-mail id:- em_zone2@yahoo.com

// आम-सूचना //

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा हितग्राहियों को लीज में भवन आबंटित है, उक्त भवन को फी-होल्ड के लिए निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया है, फ्री-होल्ड संपरिर्तन निम्नानुसार किया जाना है:-

क्र.	आबंटियों का नाम	पिता/पति का नाम	कॉलोनी का नाम	भवन क्रमांक
1	श्री राजकुमार महावार	श्री ओमप्रकाश महावार	सेक्टर-27 नवा रायपुर अटल नगर	पी2ए-482
2	श्रीमती सिन्धु वैद्य	श्री सुरेन्द्र प्रसाद वैद्य	-- तदैव-	पी2ए-483
3	श्री शैलेश कुमार सूर्यवंशी	स्व.श्री रामभरोसा सूर्यवंशी	-- तदैव--	पी3बी-15
4	श्री आकाश दीप सिंघानिया	स्व.श्री श्रवण कुमार सिंघानिया	-- तदैव--	पी4बी-737
5	श्री पदम कुमार सिंघानिया	स्व.श्री श्रवण कुमार सिंघानिया	-- तदैव-	पी4बी-739
6	श्री संतोष सिंघानिया	स्व.श्री श्रवण कुमार सिंघानिया	-- तदैव-	पी4बी-740
7	श्री सपन सालोमान मार्टिन	स्व.श्री एम. मार्टिन	- तदैव--	एफ 2 सी-20/502
8	श्री अरविन्द कुमार पाण्डेय एवं श्री अभिषेक कुमार पाण्डेय	श्री आर.एल. पाण्डेय / श्री रामकुमार पाण्डेय	- तदैव-	एफ । ए - 18/303
9	सुश्री श्वेता गांधी	श्री ए.एस. गांधी	- तदैव-	ई.डब्ल्यू.एस.- ।।, ब्लाक- 47/008
10	श्रीमती संजीता नायक एवं श्री संजीव कुमार नायक	श्री संजीव कुमार नायक / श्री देवनारायण नायक	-- तदैव-	ई.डब्ल्यू.एस. - ।. ब्लाक- 49/001
11	श्रीमती संजीता नायक	श्री संजीव कुमार नायक	- तदैव-	ई.डब्ल्यू.एस. - ।. ब्लाक- 49/002
12	श्रीमती सविता धनखड़, श्रीमती वंदना चौधरी एवं श्री स्वामी धरमानंद सरस्वती	श्री राजेन्द्र धनखड़, अश्वनी चौधरी, स्वामी ओमानन्द सरस्वती	सेक्टर-29 नवा रायपुर अटल नगर	एच.आई.जी. - । /349
13	श्री जे.आर. ठाकुर	स्व.श्री पल्टूराम ठाकुर	- तदैव-	एच. आई जी - ।।/736
14	श्रीमती जागृती मेश्राम	श्री जॉन कुमार मेश्राम	- तदैव--	एच.आई.जी. - ।। /776
15	श्री सी.एच. सूर्या राव	स्व.श्री सी.एच. विश्वनाथ राव	-- तदैव-	सीनियर एम. आई. जी.- 420
16	श्री देवाशीष मजूमदार	श्री अपारूप मजुमदार	-- तदैव--	एम.आई.जी.- । फ्लैट 01/208
17	श्री संतोष कुमार बोरकर	श्री एस.आर. बोरकर	-- तदैव--	एम.आई.जी. - । फ्लैट 06/303
18	श्री उमाकांत पटेल	श्री कमल नयन पटेल	-- तदैव-	एम.आई.जी. - । फ्लैट 07/303
19	श्री रंजीता सिंह	श्री ललित किशोर सिंह	-- तदैव--	ई.डब्ल्यू.एस. फ्लैट 16/106

अत: इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस के अन्दर किसी भी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तिय संस्था को कोई आपत्ति हो तो मय दस्तावेज के साथ अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में कार्यालयीन दिवस में प्रस्तुत करें। निर्धारित अवधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19659/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 07-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19659
वार्ड का नाम-67-भक्तमाता कर्मा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 67 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR567G0680A** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती GEETA CHANDEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **M.D. CHANDEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ARCHNA SHARMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANTOSH SHARMA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19661/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 07-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19661
वार्ड का नाम-43-महंत लक्ष्मीनारायण दास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 43 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR561C00153** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **JIVRAKHAN PRASAD** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MOHAN LAL UPADHAYAY** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. DEVENDRA SHARMA 2. NEERAJ SHARMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. KAMALKANT SHARMA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19660/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 07-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19660
वार्ड का नाम-66-वामन राव लाखे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 66 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR565F00478** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RAMADIAN VERMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BHAGELA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **LAXMINARAYAN VERMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMADHIN VERMA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19662/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 07-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19662
वार्ड का नाम-43-महंत लक्ष्मीनारायण दास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 43 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR662K00204** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RAMADHAR YADU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. RAMDAYAL YADU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. MAHENDRA KUMAR YADU 2. NAGENRA YADU 3. CHETENDRA KUMAR YADU 4.YOGENDRA KUMAR YADU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. RAMADHAR YADU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./19658/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2025
रायपुर दिनांक : 07-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19658
वार्ड का नाम-67-भक्तमाता कर्मा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 67 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR663G00043** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **DR. VIVEK AGRAWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SATANAND AGRAWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **VIJAY YADAV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GANESH RAM YADAV** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/**पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19628/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 07-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19628
वार्ड का नाम- 14- रमण मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 14 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR221B00226** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SMT. CHAGAN BAI SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O TRILOCHAN SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको **SHRI RAHUL DODWANI** श्री/श्रीमती पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O KRISHNA KUMAR DODWANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

कुदरगढ़ महोत्सव वॉलीबॉल प्रतियोगिता में गोंदा और बरपारा बने चैंपियन

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- कुदरगढ़ महोत्सव 2025 के अंतर्गत 2 से 4 अप्रैल तक आयोजित जिला स्तरीय महिला एवं पुरुष वॉलीबॉल प्रतियोगिता ने खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया। प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग में कुल 16 टीमों ने भाग लिया, जिनमें से गोंदा, गजाधरपुर, सूरजपुर और लटोरी की टीमों ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया। गौरतलब है कि कलेक्टर एस जयवर्धन के निर्देशन एवम जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू के मार्गदर्शन में जिला प्रशासन द्वारा इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।इस प्रतियोगिता के अंत में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले सभी खिलाड़ियों को मेडल पहनाकर सम्मानित किया गया। पूरे आयोजन में खेल भावना और

प्रतिस्पर्धा का बेहतरीन संगम देखने को मिला। जिला प्रशासन द्वारा कुदरगढ़ महोत्सव के माध्यम से क्षेत्रीय प्रतिभाओं को बेहतर मंच प्रदान किया गया। जिससे सभी खिलाड़ियों ने खुशी जाहिर करते हुए जिला प्रशासन का धन्यवाद किया है। इस आयोजन में पुरुष वर्ग के पहले सेमीफाइनल में गोंदा ने लटोरी को 2-0 सेट से हराया, जबकि दूसरे सेमीफाइनल में गजाधरपुर ने सूरजपुर को कड़े मुकाबले में 2-1 से मात दी। तीसरे स्थान के लिए हुए मैच में सूरजपुर ने लटोरी को 2-1 से हराया।

महिला वर्ग में भटगांव, सुंदरगंज, सार्थक वॉलीबॉल अकादमी और बरपारा की टीमों ने सेमीफाइनल तक का सफर तय किया। पहले सेमीफाइनल में सुंदरगंज ने भटगांव को 2-0 से हराया, जबकि दूसरे सेमीफाइनल में बरपारा ने रोमांचक मुकाबले में सार्थक अकादमी को 2-1 से हराया। तीसरे स्थान के लिए सुंदरगंज ने भटगांव को 2-0 से परास्त किया। प्रतियोगिता में पुरुष वर्ग विजेता गोंदा को शील्ड व 21, 000रु महिला वर्ग विजेता टीम बरपारा को भी शील्ड व 21, 000रु का पुरस्कार दिया गया इसी प्रकार पुरुष वर्ग उपविजेता गजाधरपुर 15,000 रु उपविजेता महिला सार्थक वॉलीबॉल अकादमी, बिश्रामपुर 15,000रु,पुरुष तृतीय स्थानः सूरजपुर को 11,000 तथा महिला तृतीय स्थान सुंदरगंज (को 11,000 दिया गया

व्यक्तिगत पुरस्कार विजेताओं में पुरुष वर्ग मैन ऑफ द टूर्नामेंटः हिमांशु रजक (गोंदा),महिला वर्ग मैन ऑफ द टूर्नामेंटः अमीषा रजवाड़े (नेशनल प्लेयर),पुरुष बेस्ट अटैकरः देव राजवाड़े (गजाधरपुर),महिला बेस्ट अटैकरः सोनावती राजवाड़े (सार्थक अकादमी),पुरुष बेस्ट शेटर रविंद्र रजवाड़े (गजाधरपुर)

,महिला बेस्ट शेटरः पुष्पलता (सार्थक अकादमी),पुरुष बेस्ट डिफेंसरः आशा प्रसाद रजक (गोंदा),महिला बेस्ट डिफेंसरः कुमारी मानसी (बरपारा) को दिया गया।

एसएसपी सूरजपुर प्रशांत कुमार ठाकुर ने फिटनेस का डोज, आधा घंटा रोज

दैनिक दिनचर्या में जरूर चलाए साइकिल

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)फिटनेस का डोज, आधा घंटा रोज नारे के साथ सूरजपुर पुलिस ने सायकल रैली निकालकर नागरिकों को फिटनेस के प्रति जागरूक किया और साइकिल चलाने को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने हेतु प्रोत्साहित किया। साइकिल चलाना फिटनेस को दैनिक दिनचर्या में शामिल करने के सबसे सुलभ और प्रभावी तरीकों में से एक है, जो सहनशक्ति में वृद्धि, तनाव में कमी और हृदय स्वास्थ्य में सुधार जैसे लाभ प्रदान करता है। डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने रविवार, 06 अप्रैल 2025 को पुलिस राजपत्रित अधिकारियों, थाना प्रभारी, पुलिस लाईन के अधिकारी व जवानों के साथ बड़े उत्साह के साथ साइकल रैली निकाली जो ग्राम पर्री

सहित सूरजपुर के भैयाथान रोड़, केतका रोड़ व मनेन्द्रगढ़ रोड़ में फिटनेस का डोज, आधा घंटा रोज का नारे लगाते हुए साईकल चलाकर लोगों को फिट रहने का संदेश दिया। इस साइकिल रैली में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संतोष महतो, एसडीओपी सूरजपुर अभिषेक पैंकरा, रक्षित निरीक्षक अशोक गिरी, थाना प्रभारी सूरजपुर विमलेश दुबे सहित पुलिस लाईन के अधिकारी व जवानों ने हिस्सा लिया। डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर ने बताया कि फिट इंडिया साइकिलिंग ड्राइव, साइकिलिंग संडे फिट इंडिया के तहत स्वास्थ्य, फिटनेस की ओर नागरिकों को जागरूक करने हेतु साइकिल चलाने के लिए प्रेरित करना है, इसी के तहत आज पुलिस के अधिकारी व जवानों ने नगर में साइकिलिंग किया गया। उन्होंने साइकिल रैली के माध्यम से नागरिकों से अपील किया है कि दैनिक दिनचर्या में थोड़े समय के लिए ही सही, अपने बाईक व चारपहिया वाहनों का उपयोग कम कर, प्रतिदिन कम से कम आधा घंटा साइकिल चलाएं। यह न केवल शरीर को स्वस्थ रखता है, बल्कि पर्यावरण के लिए भी अनुकूल है। फिट इंडिया और खेलो इंडिया जैसी योजनाओं के तहत इस तरह की पहल न सिर्फपुलिस-जन सहयोग को मज़बूत करती है, बल्कि समाज में स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक संदेश भी देती है।

कक्षा 12वी विषय रसायन की परीक्षा हुई सफलतापूर्वक संपन्न

भैयाथान अनुविभागीय अधिकारी द्वारा किया औचक निरीक्षण मिला 1 नकल प्रकरण

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल, रायपुर द्वारा हायर सेकण्डरी स्कूल सर्टिफिकेट ओपन परीक्षा मार्च-अप्रैल 2025 कक्षा 12वीं विषय रसायन की परीक्षा जिले के निर्धारित 09 परीक्षा केंद्रो में आज संपन्न हुई। जिसमें कुल दर्ज परीक्षार्थियों की संख्या 1019 में 936 उपस्थित एवं 83 अनपस्थित रहे। जिसमें विकासखण्ड भैयाथान के परीक्षा केंद्र में 01 नकल प्रकरण भैयाथान अनुविभागीय अधिकारी श्री सागर सिंह राज के द्वारा बनाया गया। जिसमें सुपरवाइजर महिला बाल विकास श्रीमती शीला वर्मा, पटवारी श्री पिताम्बर कुश्वाहा उपस्थित थे। अन्य समस्त परीक्षा केंद्रों में परीक्षा सुव्यवस्थित एवं शांतिपूर्ण संचालित हुई।

ट्यूशन पढ़ने आई छात्रा के साथ हेड मास्टर ने दुष्कर्म करने की कोशिश की

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिले में ट्यूशन पढ़ने आई छात्रा के साथ स्कूल के हेड मास्टर ने दुष्कर्म की कोशिश की। छात्रा ने शोर मचाते हुए घर भागकर अपने परिजनों को हेड मास्टर की करतूत बताई। इससे गुस्साए परिजनों ने हेड मास्टर की चप्पल और घूंसे से पिटाई कर दी और उसे पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपी शिक्षक को न्यायिक रिमांड पर भेज दिया है। इस घटना के बाद गांव में शिक्षक के प्रति लोगों में काफी आक्रोश है और लोग आरोपी को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग कर रहे हैं। आरोपी शिक्षक का नाम संजय कुमार कठौतिया है, जो सिर्री माध्यमिक शाला में हेड मास्टर के पद पर पदस्थ है। वह गांव में किराए के मकान पर रहता है और बच्चों को ट्यूशन पढ़ाता था। ग्रामीणों ने थाना पसान पुलिस को इसकी सूचना दी और मौके पर पहुंची पुलिस ने पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया है। कोरबा एसपी सिद्धार्थ तिवारी ने बताया कि मामले को गंभीरता से लेते हुए आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। आरोपी शिक्षक की पत्नी भी शिक्षाकर्मी है और बिलासपुर जिले में पदस्थ है। उसके बच्चे भी हैं। इस घटना के बाद से गांव में शिक्षकों के प्रति लोगों का विश्वास कम होता जा रहा है। पुलिस ने इस मामले में तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी शिक्षक को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने बताया कि आरोपी शिक्षक के खिलाफ दुष्कर्म की कोशिश और छेड़छाड़ के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। ग्रामीणों ने आरोपी शिक्षक को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग की है। ग्रामीणों का कहना है कि इस तरह की घटना दोबारा न हो, इसके लिए आरोपी शिक्षक को कड़ी सजा दी जानी चाहिए।

शासकीय सेवक की मृत्यु होने पर देय अनुग्रह राशि एक लाख पच्चीस हजार रु. स्वीकृत करने की मांग

टीचर्स एसोसिएशन ने वित्त मंत्री को भेजा मांगपत्र

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-छत्तीसगढ़ टीचर्स एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष संजय शर्मा ने वित्त मंत्री छत्तीसगढ़ शासन, वित्त सचिव छत्तीसगढ़ शासन, सामान्य प्रशासन सचिव छत्तीसगढ़ शासन को पत्र लिखकर शासकीय सेवक की मृत्यु होने पर देय अनुग्रह राशि 1,25,000/- (एक लाख पच्चीस हजार रु.) स्वीकृत करने की मांग की है। छत्तीसगढ़ टीचर्स एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष संजय शर्मा,प्रदेश उपाध्यक्ष हरेन्द्र सिंह,प्रदेश महामंत्री रंजय सिंह,प्रदेश प्रचार सचिव अजय सिंह,प्रदेश संगठन सचिव मुकेश मुदलियार, जिलाध्यक्ष भूपेश सिंह ने कहा है कि वित्त विभाग के संदर्भित परिपत्र

वित्त निर्देश 8/2015 छत्तीसगढ़ शासन वित्त एवं योजना विभाग मंत्रालय महानदी भवन नया रायपुर के आदेश क्रमांक 72/एल 2014-71-00331/वि/नि/चार नया रायपुर, दिनांक 24 मार्च, 2015 में शासकीय सेवा में रहते हुए किसी शासकीय सेवक की मृत्यु होने पर उसके परिवार को वेतनमान में बैंड वेतन एवं ग्रेड वेतन के योग के छः माह के बराबर, अधिकतम ? 50,000/- (पचास हजार) की सीमा तक अनुग्रह राशि दिये जाने का प्रावधान है। मध्यप्रदेश शासन वित्त विभाग वल्लभ भवन मंत्रालय भोपाल के आदेश क्रमांकः एफ4-1/2025 / नियम / चार भोपाल, दिनांक 03 अप्रैल, 2025 के द्वारा शासकीय सेवक की सेवा में रहते हुये मृत्यु होने पर मृतक के परिवार को, मृतक शासकीय सेवक के वेतन पुनरीक्षण नियम 2017 में देय वेतन के छः गुना के बराबर, अधिकतम ? 1,25,000/- (एक लाख पच्चीस हजार) अनुग्रह राशि स्वीकृत किया गया है।

टीचर्स एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष भूपेश सिंह, चंद्रविजय सिंह, रामचंद्र सोनी, सुरविंद गुर्जर, गौरीशंकर पांडेय,बिजेंद्र साहू, दीपक झा,मिथिलेश पाठक, पीताम्बर सिंह मरावी,नागेंद्र सिंह,चंद्रदेव चक्रधारी, जितेंद्र सिंह, रामबरन सिंह, विनोद केराम,जानकी यादव,संजय चतुर्वेदी,राज कुमार यादव ने शासन से छत्तीसगढ़ मे भी शासकीय सेवक की सेवा में रहते हुये मृत्यु होने पर मृतक के परिवार को वेतन पुनरीक्षण नियम 2017 में देय वेतन के छः गुना के बराबर, अधिकतम ? 1,25,000/- (एक लाख पच्चीस हजार) अनुग्रह राशि स्वीकृत किया जावे।

विद्यालयीन छात्रों को बकरी कुक्कड़, पालन एवं बिक्री का दिया गया प्रशिक्षण

मुर्गी चूजों का वजन, जांच ,बिक्री का भी दी गई प्रशिक्षण

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- क्षेत्र के प्रथम बस्तामुक्त विद्यालय शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला रुनियाडीह में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम अंतर्गत कुक्कुट, बकरी पालन तथा मत्स्य पालन कार्य सिखाया गया। संस्था प्रमुख सीमांचल त्रिपाठी द्वारा बताया गया कि पूर्व व्यावसायिक शिक्षा अंतर्गत बच्चों के लिए इस वर्ष मुर्गी पालन, मुर्गी से अंडा प्राप्त करना एवं अंडों को बिक्री हेतु बाजार उपलब्ध कराना रहा है। इस कार्यक्रम के लिए संस्था के प्रभारी शिक्षक रिजवान अंसारी, एम. टोप्पो तथा पूनम गुप्ता द्वारा बच्चों को अनस पोल्ट्री फार्म दतिमा एवं पेंगुइन एग्स फॉर्म राईं का शैक्षिक भ्रमण गत माह कराया गया तथा अध्यनरत बच्चों दीपक, योगेश, नितेश राजवाड़े, घरभरन, कैलाश, शिवम विश्वकर्मा, कुश देवांगन, धनेश्वर सारथी, आदित्य देवांगन, पियूष,

बहादुर सिंह, विवेक राजवाड़े, संजू सिंह, प्रीती सारथी, साधना, राजा सारथी, संजू देवांगन, कोमल राजवाड़े, अजय सिंह, देव सिंह, शालू विश्वकर्मा एवं समीर देवांगन को प्रति छात्र पांच नग मुर्गी पालन हेतु प्रदान किया गया। विदित हो कि समग्र शिक्षा के तहत पूर्व व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के तहत बच्चों को रोजगार उन्मुख कार्य सिखाए जाते हैं ताकि वे भविष्य में पढ़ लिखकर नौकरी ना पाने की स्थिति में स्व रोजगार अपनाकर, अपना तथा अपने परिवार का भरण पोषण कर सकें। मुर्गी चुजों को अनस पोल्ट्री फार्म में, फार्म के संचालक मोहम्मद अहमद बेक की देखरेख में 15 दिवस तक रखा गया, जहां उन्हें कृत्रिम रूप से गर्मी प्रदान करना, प्री स्टाटर भोजन प्रदान करना, विभिन्न प्रकार के वैक्सीन तथा टीका लगाना एवं लिवर टॉनिक देने का कार्य किया गया। तत्पश्चात बच्चों को मुर्गी पालन हेतु चुजे वितरित

किए गए थे, जिनका आज वजन जांच सहित पुरस्कार वितरण किया गया। वजन जांच कार्य में प्रथम स्थान बहादुर सिंह, द्वितीय स्थान कोमल रजवाड़े तथा तृतीय स्थान रूपा सिंह ने प्राप्त किया, जिन्हें पुरस्कार स्वरूप कॉपी-पेन देकर सम्मानित किया गया। संस्था में अध्ययनरत 10 बच्चों को 10-10 नग मुर्गी पालन हेतु और दिए जाने की योजना है ताकि बच्चे ग्रीष्मकालीन छुट्टी में मुर्गी पालन कर अंडे प्राप्त करना तथा उन्हें बेचकर आय प्राप्त करना सीख सकें। इस दौरान संस्था के प्रधान पाठक सीमांचल त्रिपाठी, नोडल शिक्षक रिजवान अंसारी, एम. टोप्पो, पूनम गुप्ता, मध्याह्न भोजन सहायिका सुमित्रा राजवाड़े, नान दईया सहित बाल कैबिनेट के मंत्री रूपा विश्वकर्मा, रिंकी राजवाड़े, सुनीता, चित्रकुमारी, कलावती, दिव्या, पायल, निशु राजवाड़े, टिकेश्वरी, निर्जला व रूपा सिंह सक्रिय रहे।

संक्षिप्त समाचार

गृह मंत्री ने नक्सलियों को भाई कह कर शहीदों का किया अपमान -अनुपम फिलिप

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सयुंक्त महामंत्री सह प्रवक्ता अनुपम फिलिप ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के उस भाषण की कड़ी निंदा की है। जिसमें उन्होंने छत्तीसगढ़ पहुंचकर नक्सलियों को भाई और अपना कहकर संबोधित किया है। काँग्रेस प्रवक्ता अनुपम फिलिप ने कहा कि हमारे देश के जवानों को वीभत्स वीरगति देने वाले किसी के अपने और भाई नहीं हो सकते। नक्सली देश की संवैधानिक व्यवस्था को नहीं मानते।गृहमंत्री का यह बयान नक्सली हिंसा में शहीद हुए जवानों और उनके परिजनों का घोर अपमान है। ऐसे गैर ज़िम्मेदाराना बयान से हमारे जवानों का मनोबल टूटता है। जो विषम परिस्थितियों में क्रूर नक्सलियों का वीरता से सामना करते है। अमित शाह ने नक्सली हिंसा में मारे गए निर्दोष नागरिकों और उनके परिजनों का भी घोर अपमान किया है। प्रदेश काँग्रेस प्रवक्ता अनुपम फिलिप ने कहा कि यदि नक्सली अमित शाह के भाई और अपने है फिर तो देश के वीर जवान उनके लिए शत्रु और पराये होंगे। गृहमंत्री ने नक्सलवाद से हो रहे सामाजिक पीड़ा पर कोई टिप्पणी नहीं की। नाही उन्होंने नक्सली गतिविधियों से हो रहे राष्ट्रीय सम्पत्ति के भीषण नुक़सान की कोई बात कही। बस हिंसक नक्सलियों को अपना भाई बता दिया। यह घोर निंदनीय और आपत्तिजनक बयान है। भाजपा नेताओं के ऐसे बयानों से हिंसा और अशांति के पक्षधरों को बल मिलता है। अमित शाह को इस बयान के लिए शहीद परिवार और छत्तीसगढ़ की जनता से माफ़ी माँगनी चाहिए।

हत्या के मामले में थाना सूरजपुर पुलिस ने एक विधि विरूद्ध संघर्षरत् बालक सहित 9 को किया गिरफ्तार

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-ग्राम तेजपुर पोड़ी थाना सूरजपुर निवासी वर्षा पति विजय कुमार ने थाना सूरजपुर में सूचना दिया कि बीते 26 मार्च को अपने पति विजय कुमार को नशा मुक्ति केन्द्र सूरजपुर में भर्ती की थी जो दिनांक 29 मार्च को अस्पताल से सूचना मिला कि विजय कुमार का तबियत खराब है अस्पताल आ जाओ जहां पहुंचने पर जानकारी मिली की पति की मृत्यु हो गई है। सूचना पर मर्ग कायम कर शव पंचनामा के बाद पीएम कराया गया।

मामले की सूचना पर डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने मामले की बारीकी से सभी पहलुओं पर जांच करने के निर्देश दिए। थाना सूरजपुर पुलिस ने मर्ग जांच के दौरान वारिशान एवं गवाहों के कथन लिए और मृतक के पीएम रिपोर्ट एवं नशा मुक्ति केन्द्र में लगे सीसीटीव्ही फुटेज तथा संकलित साक्ष्य से पाया गया कि मृतक विजय कुमार की मृत्यु मारपीट करने के कारण होने पर अपराध क्रमांक 171/2025 धारा 103, 191(2) बीएनएस के तहत मामला पंजीबद्ध किया गया। प्रकरण की विवेचना के दौरान आरोपी (1) विरेन्द्र पिता रामाधार अगरिया उम्र 23 वर्ष ग्राम भुलंगा, थाना लुण्ड्रा जिला सरगुजा (2) तेन्जींग छंगपा पिता स्व. सावोथर छंगपा तिब्बती उम्र 43 वर्ष निवासी मैनपाठ लुरैना थाना कमलेश्वरपुर जिला सरगुजा (3) राजदेव तिवारी पिता स्व. रमेश तिवारी उम्र 21 वर्श ग्राम प्रतापपुर, थाना महुआडांड जिला लातेहार झारखण्ड (4) संतोष गोस्वामी पिता केश्व गोस्वामी उम्र 25 वर्ष ग्राम जिगना थाना मोहनिया जिला भभूआ बिहार (5) कृष्णा कुमार प्रजापति पिता साधुराम उम्र 38 वर्ष ग्राम नावापारा, चौकी करंजी (6) मनोज कुमार कर्ष पिता संतू कर्ष उम्र 27 वर्ष चर्चा कालरी, थाना चर्चा जिला कोरिया (7) लक्ष्मी प्रसाद पिता रूप विसेन उम्र 24 वर्ष ग्राम नमदगिरी, थाना सूरजपुर (8) अमित तिग्गा पिता स्व. तारासिरूयूब तिग्गा उम्र 39 वर्ष ग्राम ढोढीबहार थाना कासाबेल जिला जशपुर व एक विधि विरूद्ध संघर्षरत् बालक के विरूद्ध अपराध सबूत पाए जाने पर इन्हें पकड़ा गया। पूछताछ पर आरोपियों ने वारदात को अंजाम देना स्वीकार किया। मामले में 8 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया वहीं मामले के 1 विधि विरूद्ध संघर्षरत् बालक को विधि अनुसार किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष पेश किया गया है। कार्यवाही अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संतोष महतो व सीएसपी एस.एस.पैंकरा के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी सूरजपुर विमलेश दुबे व उनकी टीम सक्रिय रही।

संपादकीय

मोदी और संघ की मुलाकात

नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री पद पर आसीन होने के 11 साल बाद पहली बार नागपुर स्थित राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) मुख्यालय पहुंचने के कई निहितार्थ निकाले जा रहे हैं। मोदी के पहले अटल बिहारी वाजपेयी ने साल 2000 में अपने तीसरे कार्यकाल में संघ मुख्यालय का दौरा किया था। मोदी भी अपने तीसरे कार्यकाल में संघ मुख्यालय गए। स्वाभाविक तौर पर मोदी ने संघ के साथ अपने अटूट संबंधों की जुगाली की। उन्होंने 'माधव नेत्रालय प्रीमियम सेंटर' की आधारशिला रखने के बाद कहा कि, 'संघ भारत की अमर संस्कृति और आधुनिक अक्षयवट है, जिसके आदर्श और सिद्धांत राष्ट्रीय चेतना की रक्षा करना है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यह (संघ) देश की चेतना को ऊर्जा प्रदान करता है।' हालांकि मोदी के नागपुर जाने और संघ प्रमुख सहित अन्य पदाधिकारियों से मिलने को विपक्ष भले मुद्दा बनाने की कोशिश में है, मगर भाजपा के नेताओं का वहां जाना कतई गलत नहीं माना जा सकता है। संघ से पीएम मोदी का दिलों का रिश्ता है, ये दशकों पुराना है. ये सफर 1972 में शुरू हुआ था। 1972 में नरेन्द्र मोदी संघ में शामिल हुए थे। प्रचारक बने, फिर के जरिए भाजपा में एंट्री हुई। गुजरात में संगठन की जिम्मेदारी मिली। 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री बने। संघ का उन्हें मजबूत समर्थन मिला। बहरहाल, मोदी के इस दौरे को भाजपा के नये अध्यक्ष के चुनाव को लेकर विचार-मंथन के तौर पर भी देखा जा रहा है। हालांकि खुद प्रधानमंत्री इस साल सितम्बर में 75 वर्ष के हो जाएंगे। स्वाभाविक है कि उनकी उम्र और भाजपा के उम्र संबंधी नियम-कायदों का भी उनके दौरे में चिंतन-मनन होगा। 2024 में संपन्न हुए लोक सभा चुनाव में मोदी का मैजिक नहीं चल सका। पार्टी आशा के अनुरूप सीटें हासिल करने में नाकामयाब रही। लाजिमी है कि पार्टी के इस लचर प्रदर्शन को लेकर यह विश्लेषण भी सामने आया कि संघ का समर्थन शायद भाजपा को नहीं मिला। वजह चाहे जो भी हो, फिलहाल भाजपा के शीर्ष नेतृत्व और संघ के शीर्षस्थ पदाधिकारियों में इस बात को लेकर गहराई से यह विमर्श हो रहा है कि पार्टी 2029 में आसन्न लोक सभा चुनाव को लेकर किस तरह की रणनीति के साथ जनता के बीच आए। इसी दरम्यान उत्तर प्रदेश में भी-2027- में विधानसभा के चुनाव होने हैं।

इतिहास पुनर्लेखन का काम कैसे हो

कुलभूषण उपमन्यु

अभी इतिहास लेखन की बात जोर-शोर से उठाने वाले भाजपा से जुड़े लोग हैं। वे भी कितना निष्पक्ष लेखन कर पाएंगे यह समय ही बताएगा। इतिहास का सच्चाई से पुनर्लेखन किया जाए भारतवर्ष में इन दिनों इतिहास पुनर्लेखन लगातार बहस का विषय बना हुआ है। इतिहास लेखन में आमतौर पर वस्तुपरक लेखन का दावा किया जाता है, किन्तु यह दावा आंशिक रूप से ही सही है। इतिहास लेखन में व्यक्तिपरक लेखन की संभावना हमेशा बनी रहती है। ज्यादातर इतिहास विजेताओं द्वारा लिखे गए, इसलिए उनमें विजेताओं का महिमामंडन या उनके पक्ष को सही ठहराने की वृति हमेशा बनी ही रहती है। किन्तु जहां भी किसी पक्ष से असंबद्ध लेखकों द्वारा लेखन हुआ वहां-वहां इतिहास की वस्तुनिष्ठता, विश्वसनीयता की कसौटी पर तुलनात्मक रूप से खरी उतरती है। भारतवर्ष का आधुनिक प्रचलित इतिहास मुस्लिम आक्रांताओं, अंग्रेजी शासन और वाम विचारधारा से जुड़े इतिहासकारों की देन है, जिसमें बहुत मेहनत से काम हुआ है। किन्तु उसमें निष्पक्षता का स्तर असंदिग्ध नहीं है। क्योंकि उन सभी के अपने-अपने निहित स्वार्थ हैं या भारत को देखने की अपनी विशिष्ट दृष्टि है, जो किसी भी बाहरी व्यक्ति के लिए स्वाभाविक है। मुस्लिम आक्रांता ऐसे देशों से आए थे जहां खाने, जीने के साधन पर्याप्त मात्र में उपलब्ध नहीं थे। इसलिए लूट के अतिरिक्त दूसरा लक्ष्य था कि भारत में ही बस कर यहां की सुख-सुविधाओं का अपनी इच्छा से उपभोग कर सकें। उनके लिए दूसरे देशों में जाकर इस्लाम को फैलाना भी पुण्य का काम था, इसलिए अनेक देशों को जीत कर इस्लाम फैलाने के लिए भी उन्होंने आक्रामक रुख अपनाया और अपने इस लक्ष्य को जायज ठहराने की दृष्टि से इतिहास लेखन हुआ। अंग्रेजों की दृष्टि तत्कालीन ईसाई दृष्टि थी, जिसके अनुसार जो भी लोग ईसाइयत का ज्ञान नहीं रखते और मानते वे लोग बर्बरता में फंसे हुए हैं, उनकी मुक्ति के लिए हमें वहां ईसाइयत का संदेश लेकर जाना है। यह हमारा धार्मिक कर्तव्य है। हालांकि यूरोप का ठंडा जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों का अभाव भी उसके पीछे का कारण रहा है, जिस

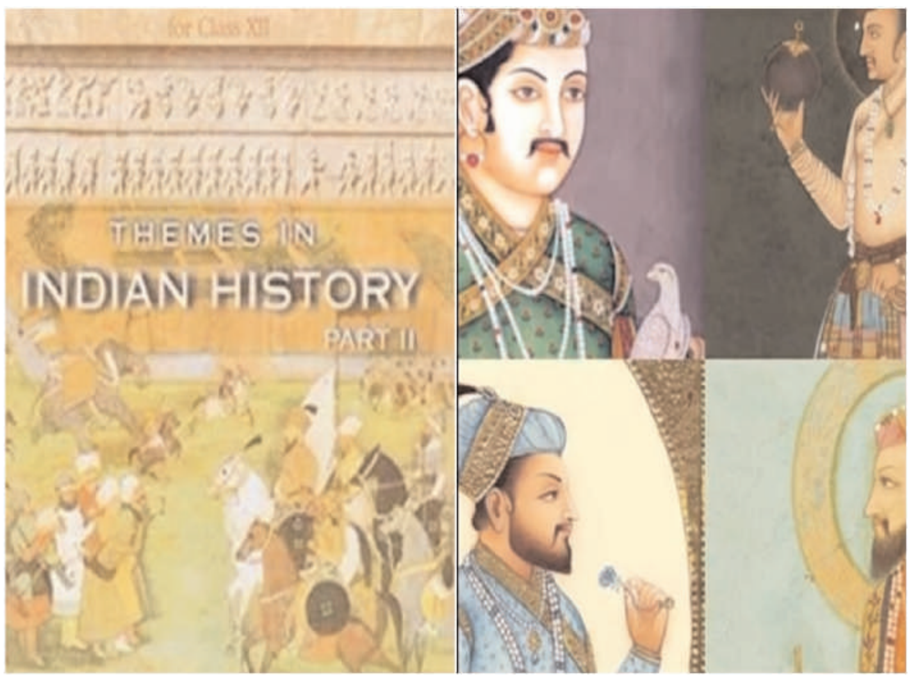

कमी को पूरा करने के लिए उपनिवेशवाद का सहारा लिया गया और तमाम एशियाई, अफ्रीकी और अमरीकी देशों पर कब्जा करने की मुहिम शुरू हुई और कुछ देशों की आबादी को पूरी तरह नष्ट करके खुद वहां के मालिक बन गए, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया। जहां इस तरह का कब्जा करके पूरी आबादी को ही प्रतिस्थापित करना संभव नहीं था, वहां उन्होंने स्थानीय सभ्यताओं और संस्कृतियों को घटिया साबित करने और पाश्चत्य सभ्यता को स्थापित करके अपने शासनों को सुनिश्चित करने का कार्य किया। इतिहास लेखन का उनका कार्य इसी दृष्टि से किया गया। ज्यादातर परिकल्पनाएं जिनकी स्थापना की गई, वे उनके उपरोक्त लक्ष्यों को पूरा करने वाली थीं। बड़ी चालाकी से उन्होंने, जो तथ्य या घटनाएं उन्हें अपने उपयुक्त नहीं लगीं, उनका विलोपन कर दिया गया या अनदेखा किया गया। हालांकि उन्होंने तथ्यात्मकता और वस्तुपरकता को आधार बना कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण की स्थापना की, किन्तु तथ्यों और घटनाओं की व्याख्या अपने यूरोपीय दृष्टिकोण से करने के कारण बहुत सी जाने या अनजाने गलतियां कीं जो उनके लक्ष्यों की पूर्ति के लिए जरूरी थीं। उदाहरण के लिए भारत की दयनीय स्थिति का झूठा चित्रण करके अपने आप को उन्नत साबित करने का काम नई शिक्षा द्वारा किया गया, जबकि धर्मपाल द्वारा इकठ्ठे किए गए ब्रिटिश रिकॉर्ड के आंकड़ों से यह साबित होता है कि उनका यह कथानक झूठा है। 1822-25 के मद्रास प्रेसीडेंसी में किए गए सर्वे के अनुसार उस समय भी प्रेसीडेंसी में 11575 स्कूल और 1094 कॉलेज थे जिनमें क्रमश: 157195 और 5431 विद्यार्थी पढ़ रहे थे। जातिगत बनावट के बारे में भी हैरान करने वाले आंकड़े सामने आते हैं, जिनके अनुसार तमिल भाषी क्षेत्र में शूद्र और उनसे निचली जातियों से संबंधित 70 से 80 फीसदी विद्यार्थी थे, उडिया क्षेत्र में 62 फीसदी, 54 फीसदी मलयालम भाषी क्षेत्रों में और 50 फीसदी तेलगु क्षेत्रों में थे। यही बात यहां उपलब्ध तकनीकी ज्ञान के बारे में भी लागू होती है। उत्तरप्रदेश के अतिरंजी खेड़ा में 12वीं शताब्दी ईसा पूर्व में भी लोहे का प्रयोग होता था, किन्तु 18वीं शताब्दी सीई तक भी यहां बढिया किस्म का स्टील बनाया जाता था, यह बात कम ही लोग जानते हैं। उस समय प्रति वर्ष उच्च कोटि का स्टील बनाने वाली कम से कम 10000 ऐसी भट्टियां कार्यरत थीं जो साल में बीस टन तक स्टील तैयार कर रही थीं। चेचक के इलाज के लिए इनोकुलेशन की जाती थी और प्लास्टिक सर्जरी द्वारा अंग मरम्मत की जाती थी। सुश्रुत के सदियों बाद तक यह विद्या 18वीं शताब्दी तक मौजूद थी। यह भारतीय सेवा के तत्कालीन अफ्सर डा. बैरी द्वारा वर्णित पूना में उनके द्वारा देखे गए एक आपरेशन से पता चलती है। उसके बाद वामपंथी इतिहासकारों का युग आया। उन्होंने भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उपयोग पाश्चात्य दृष्टि से ही किया जिसमें एक बात ईसाई दृष्टिकोण के समान ही थी कि जो भी पाश्चात्य नहीं है, वह घटिया है। इसके चलते उन्होंने भी तथ्यों, घटनाओं का विश्लेषण और व्याख्या अपने लक्ष्य वामपंथ को फैलाने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाने के लिए की। इतिहासकार धर्मपाल ने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश प्रशासन से जुड़े अफ्सरों द्वारा किए गए सर्वेक्षणों के रिकार्ड ब्रिटिश संग्रहालयों से खोज कर ब्रिटिश पूर्व भारतीय इतिहास का एक छिपा हुआ पक्ष सामने लाने का कार्य किया है, जो बहुत ही सराहनीय है। वर्तमान इतिहास लेखन में भारतीय दृष्टि की स्थापना के लिए इसे उपयोग में लाया जाना चाहिए। खासकर इस कारण कि यह पूर्णत: तथ्यों पर आधारित है और वे तमाम आंकड़े जिनका प्रयोग धर्मपाल ने किया है, वे किसी भारतीय पक्षपाती द्वारा नहीं जुटाए गए हैं, बल्कि ब्रिटिश रिकार्ड से ही लिए गए हैं। भारत को देखने का एक प्रयास जेम्स मिल द्वारा किया गया है। अभी इतिहास लेखन की बात जोर-शोर से उठाने वाले भाजपा से जुड़े लोग हैं। वे भी कितना निष्पक्ष लेखन कर पाएंगे यह समय ही बताएगा, क्योंकि उनकी सोच में सब कुछ जो हिंदू संस्कृति से जुड़ा है, वह अच्छा ही है, जबकि किसी भी समाज में अच्छाई-बुराई दोनों ही विद्यमान रहती हैं। इतिहास में कोई भी बदलाव प्रामाणिकता के आधार पर ही किया जाना चाहिए। इतिहास आत्मसम्मान को बनाए रखने का माध्यम भी है। इसी दृष्टि से इतिहास का सच्चाई से लेखन किया जाना चाहिए, ताकि इतिहास की गलतियां न दोहराई जाएं।

आलेख

उच्च शिक्षा नीति में एक बड़ा बदलाव

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने

मध्य प्रदेश सरकार ने उच्च शिक्षा नीति में एक बड़ा बदलाव करते हुए कई दक्षिण भारतीय भाषाओं को राज्य शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल कर बेहद सकारात्मक संदेश दिया है। अब राज्य के कॉलेजों में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू के अलावा बंगाली, मराठी, तेलुगू, तमिल, गुजराती और पंजाबी जैसी भारतीय भाषाओं में भी शिक्षा दी जाएगी। इस पहल के तहत छात्रों को अपनी मातृ भाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा जिससे उनकी भाषाई क्षमता और सांस्कृतिक जुड़ाव में वृद्धि होगी। त्रिभाषा फार्मूले के बाद कई दशकों से होने वाली भाषाई राजनीति के थमने के आसार बढ़ गए हैं। मध्य प्रदेश का यह कदम देश में भाषावाद की राजनीति को खत्म करने वाला और राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण हो सकता है। दरअसल, करीब छह दशक पहले भारत में त्रिभाषा फार्मूले को इसलिए प्रस्तावित किया गया था जिससे कि विविधता वाले विशाल भारत देश में बहुभाषावाद और राष्ट्रीय सद्भाव को बढ़ावा मिले तथा इसे देश की एकता और अखंडता को मजबूती मिल सके। कोठारी आयोग ने इसकी सिफारिश 1960 के दशक में की थी। यह फार्मूला भारतीय भाषाओं की समृद्धि और विविधता को बनाए रखते हुए छात्रों को विभिन्न भाषाओं के ज्ञान के माध्यम से एकता, संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का संदेश देने वाला बताया गया था। त्रिभाषा फार्मूला का उद्देश्य भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भाषाई विविधता को प्रोत्साहित करना और एकता बनाए रखना था, लेकिन इसके कई पहलुओं पर सही तरीके से अमल नहीं किया गया है। उत्तर भारत के कुछ हिस्सों खासकर हिन्दीभाषी राज्यों में दक्षिण भारतीय भाषाओं के महत्त्व को ठीक से समझने या स्वीकार करने में कुछ हद तक उपेक्षापूर्ण रवैया देखा गया। इसका असर त्रिभाषा फार्मूला और भाषाई समानता के मुद्दे पर भी पड़ा। आम तौर पर हिन्दीभाषी क्षेत्रों में महसूस किया जाता है कि हिन्दी के अलावा अन्य भाषाएं जैसे तमिल, तेलुगू, कन्नड़ या मलयालम उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, जिससे दक्षिण भारत के लोगों को अपमान का अहसास होता है। दक्षिण भारतीय भाषाओं के महत्त्व को नकारने को दक्षिण भारत में भाषाई श्रेष्ठता और सांस्कृतिक असंवेदनशीलता की तरह लिया गया और बाद में दक्षिण भारत की राजनीति में इसे हिन्दी विरोध के रूप में प्रचारित किया गया। इससे देश में भाषा और पहचान को लेकर उत्तर भारत और दक्षिण भारत में एक लकीर खिंच गई। वास्तव में इस समय राजनीतिक दलों से अपेक्षा थी कि वे भाषा और पहचान के बीच के संबंधों को बेहतर तरीके से लोगों को समझाएं तथा समावेशी दृष्टिकोण अपना कर राष्ट्रीय एकता को मजबूती दें। लेकिन ऐसा हो न सका। इस कारण त्रिभाषा सूत्र को लागू करने में भारी समस्याएं सामने आ गई। तमिलनाडु, पुडुचेरी और त्रिपुरा जैसे राज्य अपने स्कूलों में हिन्दी सिखाने के लिए तैयार नहीं हुए। वहीं किसी भी हिन्दीभाषी राज्य ने अपने स्कूलों के पाठ्यक्रम में किसी भी दक्षिण भारतीय भाषा को शामिल नहीं किया। उत्तर भारतीय दृष्टिकोण से दक्षिण भारत की भाषाओं को पूरी तरह से महत्व नहीं दिया जाता और धारणा बनती है कि ये भाषाएं हिन्दी के मुकाबले कम महत्त्वपूर्ण हैं। उत्तर भारत में हिन्दी का प्रभुत्व इतना गहरा है कि कई लोग इसे राष्ट्रीय एकता और पहचान का प्रतीक मानते हैं। इस मानसिकता में दक्षिण भारत की भाषाओं को शामिल करने की बजाय हिन्दी को ही देश की एकमात्र प्रमुख भाषा माना जाता है। 1960 के दशक में जब दक्षिण भारत में हिन्दी के खिलाफ विरोध हो रहा था, तो उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में इसे राष्ट्र के खिलाफ आंदोलन की तरह समझा गया था। उत्तर भारतीयों को यह महसूस नहीं हुआ कि यह केवल एक भाषा का सवाल नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और पहचान का मुद्दा था। इस असंवेदनशीलता ने दक्षिण भारत के लोगों को आभास कराया कि उत्तर भारत उनकी सांस्कृतिक और भाषाई पहचान की कद्र नहीं करता। भारत में भाषावाद जटिल और संवेदनशील समस्या रही है, जो देश की विविधता और एकता, दोनों को प्रभावित करती है।

घरेलू हिंसा और झूठे मुकदमों से घुटते पुरुष

रेखा शाह आरबी

हमारे देश में महिला सुरक्षा एक ज्वलंत और महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है । आधुनिक समाज और सरकार की यह मंशा रही है कि महिलाएं किसी भी प्रकार के हिंसा उत्पीड़न और दुर्व्यवहार से सुरक्षित रहे। समाज में महिलाओं को सुरक्षित माहौल मिले और काम करने का अधिकार मिले और वह आत्मनिर्भर बनकर समाज को सशक्त बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाए।इसके लिए भरसक प्रयास किया गया है । इसके लिए महिलाओं के हित सुरक्षा के लिए अनेक कानून और नीतियां है । जो उन्हें समाज में समान स्थान दिलाने के लिए जरूरी भी था। दहेज प्रथा भारतीय समाज और महिलाओं के लिए एक अभिशाप था। और इसके उन्मूलन के लिए कानूनी प्रावधान रुपी सशक्त कानून दहेज प्रतिषेध अधिनियम (1961) बनाया गया जिसमें भारतीय दंड संहिता की धारा 498ए का उद्देश्य दहेज की प्रताड़ना से प्रताड़ित महिलाओं का उत्पीड़न रोकने के लिए बनाया गया था । जो काफी कारगर भी सिद्ध हुआ है । इस कानून के कारण महिलाओं को घरेलू हिंसा से संरक्षण सुरक्षा बहुत हद तक मिल रहा है । जिससे वह अपना सुरक्षित विकास कर सके। अपने देश में जब भी सामाजिक न्याय ,शोषण, लैंगिक समानता की चर्चा उठती है । तब सिर्फ महिलाओं को ही शोषित और प्रताड़ित माना जाता है जो कि सर्वथा अनुचित है। पुरुष भी प्रताड़ना के शिकार होते हैं घरेलू हिंसा के शिकार होते हैं । उनके साथ भी अनुचित और घोर अमानवीय व्यवहार होता है। पुरुष को भी घरेलू हिंसा से टॉर्चर किया जाता है और झूठे मुकदमों में फंसा कर उन्हें प्रताड़ित किया जाता है। दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 जैसा एक तरफा कानून होने के वजह से पुरुषों को अपनी सुरक्षा के लिए कानूनी संरक्षण नही प्राप्त हो पाता है । जिसके कारण वह खुद को लाचार और असहाय महसूस करते हैं। कुछ महिलाएं 498ए धारा को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने लगी हैं ।और दुर्भावना से प्रेरित होकर निर्दोष पुरुष और उनके परिवारों को इस कानून के दायरे में फंसाने के लिए उपयोग करने लगी हैं। आप सोच कर देखिए यदि कोई महिला अपनी गलत मंशा की पूर्ति के लिए यदि इस कानून का अपने ससुराल वालों के खिलाफ इस्तेमाल करती है। या पति के खिलाफ इस्तेमाल करती है तो वह कितने असहाय हो जाते हैं। और इसके अलावा हमारे समाज की मानसिकता ऐसी है कि जब भी स्त्री और पुरुष में कोई विवाद का मामला सामने आता है । तो बिना विचार किये पुरुषों को दोषी और अपराधी बता दिया जाता है। जबकि पुरुष भी दोषी हो सकता है महिला भी दोषी हो सकती है इसका पूरी संभावना रहती है। अधिकांश पुरुष अपने घर की बातें समाज में ले जाने से भी अक्सर कतराते है । क्योंकि उसे उसी समाज में रहना होता है ।और वह अपनी जग हंसाई से डरता है ।और जब भी पुरुष दहेज के झूठे मुकदमे में फंसता है या घरेलू हिंसा का शिकार होता है तो वह ज्यादातर घुट घुट कर जीने को मजबूर हो जाता है। क्योंकि वह जानता है कि ज्यादातर लोगों की सहानुभूति बिना हकीकत को जाने महिला पक्ष की तरफ रहेगी। उसका आत्मविश्वास पहले ही टूट जाता है। और पुरुष प्रताड़ना का सबसे ज्यादा आधार बनते हैं वह नियम जो स्त्रियों को सुरक्षा देने के लिए बनाए गए । किसी भी वैवाहिक जीवन में विवाद की स्थिति आने पर दहेज प्रतिषेध अधिनियम (1961) के कानून धारा 498ए का पत्नि और उनके परिवार वाले नाजायज और अनुचित फायदा उठाते हैं। और उन्हें कानून के आधार पर डरा धमकाकर अपनी अनुचित और नाजायज मांगो की पूर्ति करते हैं। और पुरुष अपने परिवारजन और अपने आप को बचाने के खातिर ब्लैकमेल होता रहता है। भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 498ए, जो एक विवाहित महिला के प्रति उसके पति या पति के रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता से संबंधित है, अब भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 85 में शामिल की गई है। इस नए प्रावधान में मूल रूप से वही अपराध परिभाषित है, जिसमें किसी महिला के प्रति क्रूरता (शारीरिक, मानसिक या भावनात्मक) को दंडनीय बनाया गया है, और इसमें कारावास की सजा, जो तीन साल तक हो सकती है, के साथ-साथ जुर्माना भी शामिल है। कई बार इन कानूनो के वजह से ऐसा हो जाता है कि जहां तक उसके बर्दाश्त की सीमा होती है वहां तक वह यह प्रताड़ना झेलता रहता है। और जब यही प्रताड़ना हद से ज्यादा बढ़ जाती है तो वह सुसाइड की तरफ अपना कदम बढ़ा लेता है। और इसके एक नहीं अनेक समाज में उदाहरण देखने को मिल रहे हैं। ऐसे प्रताड़ना के शिकार होकर मरने वाले पुरुषों की संख्या दिन-ब-दिन आश्चर्यजनक रूप से बढ़ती ही जा रही है। उदाहरण के लिए आगरा निवासी टीवीएस कंपनी के मैनेजर मानव शर्मा, बेंगलुरु के एआई इंजीनियर अतुल सुभाष, दिल्ली के सॉफ्टवेयर इंजीनियर सतीश या इनके जैसे अनेक नाम मात्र घरेलू हिंसा और पत्नी प्रताड़ना के वजह से अपनी जीवन लीला समाप्त कर लिए। यह दो-तीन नाम तो मात्र चर्चा में आए और सुर्खियों में आने के कारण लोग जान रहे हैं। लेकिन इनके अलावा भी हजारों ऐसे लोग हैं जो घोर प्रताड़ना के शिकार हैं ।और जिनकी खोज खबर लेने वाला भी कहीं कोई नहीं है। वह मर मर कर जीने को मजबूर है । यह सब कोई अशिक्षित, बेरोजगार युवा नहीं है बल्कि समाज में अच्छे ओहदे पर कार्यरत और पढ़े लिखे युवा थे । सोच कर देखिए इतने अच्छे ओहदो पर अपनी बुद्धि ,क्षमता, कार्य कुशलता से पहुंचने वाले युवा आखिर ऐसी कौन सी स्थिति बन रही है कि अपने आप को खत्म कर ले रहे हैं

राष्ट्रहित में नहीं वायुसेना की घटती ताकत

अनुज आचार्य

भारत सरकार को कुछ अन्य सुरक्षा उपायों पर भी ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है, जिसमें हमारी हवाई रक्षा कवच (एयर डिफेंस) के साथ-साथ हमें ड्रोन और मिसाइल के एक एकीकृत बल के निर्माण को मजबूत बनाना होगा। उम्मीद है कि भारत सरकार चौतरफा चुनौतियों से निपटने और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुनिश्चित बनाए रखने के लिए भारतीय वायुसेना की ऑपरेशनल तैयारियों को दुरुस्त बनाने के लिए आवश्यक निर्णयों को अमलीजामा पहनाएगी भारतीय वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह वायुसेना में लड़ाकू विमानों के बेड़े की घटती ताकत को लेकर अपनी चिंताएं जगजाहिर कर चुके हैं। जिस प्रकार से वायुसेना के लड़ाकू विमान लगातार दुर्घटनाग्रस्त हो रहे हैं, लड़ाकू विमानों की आपूर्ति से जुड़ी दिक्कतें बढ़ रही हैं और इंजनों के लिए जनरल इलेक्ट्रिक पर निर्भरता कायम है, उसने भी भारतीय वायु सेना की ताकत और युद्ध के लिए तैयार रहने की कोशिशों को प्रभावित किया है। गत दिनों चाणक्य डायलॉग्स सम्मेलन में बोलते हुए वायुसेना प्रमुख ने यह भी कहा कि भारत में हर साल कम से कम 35 से 40 सैन्य विमानों का निर्माण किए जाने की जरूरत है और यह क्षमता रातोंरात नहीं बनाई जा सकती है। 'भारत 2047 : युद्ध में आत्मनिर्भर' नामक विषय पर उन्होंने जोर देकर कहा कि इस लक्ष्य को पूरा करना असंभव भी नहीं है। एयर चीफ मार्शल एपी सिंह के अनुसार भारतीय वायुसेना 2047 तक अपनी सभी जरूरतों के सामान का उत्पादन भारत में ही करने की दिशा में काम कर रही है। फिलहाल भारतीय वायुसेना के पास 600 के करीब लड़ाकू विमान हैं, जिनमें 248 सुखोई 30 एमकेआई, 45 मिराज 2000, 130 जगुआर, 40 मिग 21 बाइसन, 32 तेजस एलसीए एमके 1, 65 मिग 29 और 36 राफेल शामिल हैं। लेकिन यदि चीन से तुलना की बात की जाए तो हमारे पास उसके विमानों के करीब आधी संख्या ही है। भारतीय वायुसेना को अभी तक 40 स्वदेशी तेजस विमान भी नहीं मिले हैं जबकि चीन ने छठी पीढ़ी का लड़ाकू विमान भी तैयार कर लिया है। 2008 में चीन का रक्षा बजट 78.78 अरब डॉलर का था, जो 2025 में भारत का रक्षा बजट है। यानी रक्षा बजट के मामले में हम आज भी चीन से 17 साल पीछे हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए एक दशक तक रक्षा बजट को तुरंत जीडीपी के 4 प्रतिशत के बराबर किए जाने की जरूरत है। इतना ही नहीं,

भारतीय वायुसेना के पास हर हाल में देश की सुरक्षा के लिए 42 स्क्वाड्रन का होना जरूरी है। लेकिन इस वक्त भारत के पास करीब 32 स्क्वाड्रन हैं और यदि स्क्वाड्रनों की संख्या नहीं बढ़ाई गई तो साल 2035 तक भारत के पास सिर्फ 25 से 27 स्क्वाड्रन ही बचेंगे। इसलिए समझा जा सकता है कि आने वाले वर्षों में हालात किस कदर भयावह हो सकते हैं। एक स्क्वाड्रन में करीब 18 लड़ाकू विमान होते हैं। इस साल के अंत तक आखिरी मिग-21 को भी सर्विस से बाहर कर दिया जाएगा। एचएएल को भारतीय वायुसेना के लिए 83 तेजस एमआई1ए लड़ाकू विमान बनाने हैं और सभी 83 तेजस एमआई1ए की डिलीवरी साल 2029 तक देनी है, लेकिन इसमें भी देरी हो रही है। भारतीय वायु सेना की आधिकारिक स्थापना 8 अक्टूबर 1932 को हुई थी। भारतीय वायु सेना का आदर्श वाक्य 'नभ: स्पृशं दीप्तम्' है। इसका मतलब है 'गौरव के साथ आकाश को छूना'। यह वाक्य भगवद्गीता के ग्यारहवें अध्याय से लिया गया है। पिछले 93 वर्षों में भारतीय वायुसेना ने उपलब्धियों से परिपूर्ण एक गौरवशाली सफर तय किया है। भारतीय वायुसेना आसमान में भारत की ताकत को और बढ़ाना चाहती है और इसके लिए भारतीय वायुसेना को 114 नए लड़ाकू विमान चाहिए। मल्टी रोल फाइटर जेट प्रोग्राम के तहत ये विमान खरीदे जाने हैं। वायुसेना चाहती है कि 5 साल के भीतर पहला लड़ाकू विमान भारत में आ जाए। खरीद प्रक्रिया में 7 विमान दौड़ में शामिल हैं। ज्यादातर विमानों का पहले ही परीक्षण हो चुका है, इसलिए उम्मीद है कि लड़ाकू विमानों की खरीद प्रक्रिया तेज होगी। यह प्रसन्नता की बात है कि भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी सैन्य ताकत बन चुका है। ग्लोबल फायरपावर की तरफ से वर्ष 2025 की सैन्य ताकतों की रैंकिंग में पहले स्थान पर अमरीका है। दूसरे स्थान पर रूस का नंबर आता है, जबकि चीन तीसरे स्थान पर है। पांचवें स्थान पर दक्षिण कोरिया है। अपनी सैन्य व एटमी ताकत का धौंस देने वाला पाकिस्तान इस बार तीन अंक खिसक कर 12वें स्थान पर पहुंच चुका है। ग्लोबल फायर पावर नामक संस्था रैंकिंग के लिए 60 से ज्यादा मानकों पर ध्यान देती है। इसमें सेनाओं की संख्या, हथियारों की ताकत, लॉजिस्टिक्स लाने-ले जाने की क्षमता, भौगोलिक स्थिति शामिल हैं। फायरपावर इंडेक्स (जीएफपी) में कम स्कोर का मतलब देश की ज्यादा सैन्य ताकत होती है। अमरीका ने सबसे कम पावर इंडेक्स (0.744) हासिल कर टॉप किया है। भारतीय वायुसेना ने जिन युद्धों में भाग लिया है, उनमें द्वितीय विश्वयुद्ध, 1947 का भारत-पाक युद्ध, कांगो संकट, गोवा मुक्ति संग्राम, भारत-चीन युद्ध, 1965 का भारत-पाक युद्ध, बांग्लादेश मुक्ति युद्ध, ऑपरेशन मेघदूत, ऑपरेशन पुमलाई, ऑपरेशन पवन।

संक्षिप्त समाचार

गर्वित कोचर-अतिमुक्त मुनि व दृती बैद-ब्राम्ही को फेन्सी ड्रेस व 2 मिनट प्ले को दर्शकों ने पसंद किया, समृद्धि प्रेजेंट वीरा जॉयलेंड में प्रस्तुति

रायपुर (विश्व परिवार)। भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर जैन दादाबाड़ी में आयोजित समृद्धि प्रेजेंट वीरा जॉयलेंड

में फेन्सी ड्रेस व 2 मिनट प्ले में गर्वित कोचर 4 वर्ष व दृती बैद 3 वर्षको पुरस्कृत किया गया। गर्वित कोचर ने भगवान महावीर स्वामी के शिष्य अतिमुक्त मुनि का प्ले किया। बालक अतिमुक्त गौतम स्वामी से प्रभावित होकर महावीर स्वामी के पास दीक्षित होते हैं। एक समय अन्य साधुओं के साथ पदयात्रा करते समय कुछ बच्चों को पानी में नाव चलाकर खेलते देखते हैं और स्वयं भी अपने पात्रे को पानी में तैरा कर खेलते हैं। महावीर प्रभु के सम्मुख आने पर अन्य साधुओं के बताने पर प्रभु अतिमुक्त मुनि को इरियावहियम का प्रायश्चित देते हैं। बालक अतिमुक्त मुनि को इरियावहियम के चिंतन में केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। गौरव प्रेरणा कोचर के 4 वर्षीय पुत्र गर्वित कोचर को इस 2 मिनट की प्रस्तुति में अतिमुक्त के ड्रेस व प्ले के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। राहुल सोनल बैद की पुत्री दृती बैद ने प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की पुत्री ब्राम्ही का रोल प्ले किया, पिता श्री ऋषभदेव जी से शिक्षा प्राप्त कर ब्राम्ही लिपि की शिक्षा जनमानस को दी यही से ब्राम्ही लिपि का आरम्भ हुआ। गर्वित कोचर व दृती बैद को इस सारगर्भित प्ले के लिए पुरस्कृत किया गया।

रश्मिरथी की रश्मियों से दमक उठा जशरंग महोत्सव का मंच

जशपुर (विश्व परिवार)। प्रथम जशरंग राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव के चौथे दिन मंचित हुई राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित खंडकाव्य

रश्मिरथी की प्रस्तुति दर्शकों के हृदय को छू गई। यह अद्वितीय नाट्य मंचन सुरभि, बेगूसराय, बिहार द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसकी परिकल्पना, निर्देशन और एकल अभिनय का त्रिगुणात्मक भार बखूबी निभाया हरीश हरिऔध ने। करीब 300 दर्शकों की उपस्थिति में यह डेढ़ घंटे की प्रस्तुति महाभारत के महापात्र कर्ण के जीवन, संघर्ष, और चेतनाओं की एक मार्मिक गाथा बनकर उभरी। हरीश हरिऔध ने एकल अभिनय की सीमाओं को पार कर कर्ण के अंतर्द्वंद, गर्व, पीड़ा और साहस को जिस सजीवता से मंच पर उतारा, उसने दर्शकों को मोह लिया। उनके चेहरे के हाव-भाव, स्वर की उतार-चढ़ाव भरी अभिव्यक्ति, और संवाद अदायगी ने दर्शकों को क्षण भर को भी मंच से विमुख नहीं होने दिया। प्रकाश संयोजन और रिकार्डेड संगीत के ज़रिए आशीष कुलकर्णी ने नाटक के भाव-प्रवाह को गहराई प्रदान की, वहीं सदानंद वासुदेव मुल्लिक का मंच पर दिया गया लाइव संगीत नाटक के भावनात्मक क्षणों को और अधिक सजीव बनाता रहा। मंच व्यवस्था में खुद सुरभि के सचिव अजय कुमार भारती और अशोक ठाकुर की साधारण मंच सज्जा सौंदर्य स्पष्ट रूप से झलकती रही। रश्मिरथी की यह प्रस्तुति न केवल एक साहित्यिक कृति का नाट्य मंचन था, बल्कि यह आत्मबल, सामाजिक पीड़ा और नायकत्व की गूढ़ परतों को उद्घाटित करने वाला एक गंभीर प्रयास भी था। डॉ आनंद कुमार पांडेय के संयोजन में आयोजित इस नाट्य महोत्सव की यह प्रस्तुति कई मायनों में यादगार बन गई। रश्मिरथी की यह छंदबद्ध नाट्य प्रस्तुति अपने अभिनय, निर्देशन, संगीत और सम्पूर्ण समर्पण के साथ जशपुर की रंगपरंपरा में एक नया उजास भर गई। यह महज एक नाटक नहीं, बल्कि कर्ण के माध्यम से मनुष्यत्व की खोज थी और उस खोज ने दर्शकों को भीतर तक झकझोर दिया। दर्शकों ने नाटक की भूरी भूरी प्रशंशा करते हुए खड़े होकर सम्मान में देर तक तालियां बजती रही.

महावीर जयंती पर 10 अप्रैल को मटन मार्केट बंद

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देशानुसार जैनों के 24वें तीर्थकर अहिंसा के अवतार भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याण दिवस पर्व के उपलक्ष्य में 10 अप्रैल 2025 दिन गुरूवार को नगर निगम सीमाक्षेत्र में स्थित पशुवध गृह एवं मटन मार्केट पूर्णरूपेण बंद रहेंगे। नगर निगम आयुक्त श्री अतुल विश्वकर्मा ने स्वास्थ्य विभाग को उक्त दिवस पर पशुवध एवं विक्रय कार्य पूर्णतः प्रतिबंधित सुनिश्चित करने कहा है। आयुक्त श्री विश्वकर्मा ने स्वास्थ्य विभाग को उक्त दिवस पर मांस विक्रय करते पाये जाने पर मांस जप्त करने एवं संबंधित के विरूद्ध यथोचित कानूनी कार्यवाही करते हुये 5 हजार रूपये तक जुर्माना करने के निर्देश दिये है। उन्होंने समस्त स्वच्छता निरीक्षकों को उक्त दिवस को अपने अपने क्षेत्र में पर्यवेक्षण करने के निर्देश दिये है।

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हर घर में और चौराहों पर गूंजना चाहिए जना कल्याणक के बधाई गीत : भावलिंगी संत श्रमणाचार्यश्री विमर्श सागर जी महामुनि

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के 2624 वें जन्म कल्याणक महामहोत्सव के उपलक्ष्य में राजधानी दिल्ली में परमपूज्य जिनागम पंथ प्रवर्तक संघ शिरोमणि भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज के विशाल चतुर्विध संघ के सानिध्य में कैलाश नगर के श्री महावीर पार्क में मनाया गया। 4 अप्रैल से 6 अप्रैल तक त्रिदिवसीय अनुष्ठान के साथ यमुनापार के 10 जिनालयों व सामुदायिक भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक आचार्य संघ के सानिध्य में सम्पन्न किया गया। जिसमें 4 अप्रैल के प्रथम दिवस श्री महावीर पार्क में त्रिदिवसीय अनुष्ठान का ध्वजारोहण किया गया और विधिवत् धर्मसभा के प्रारंभ के साथ आचार्य श्री ने भगवान महावीर स्वामी के सर्वश्रेष्ठ दर्शन का मार्मिक उद्‌बोधन प्रदान करते हुए कहा - भगवान महावीर का दर्शन भेद-भाव का दर्शन नहीं है भगवान महावीर स्वामी की दर्शन भेद विज्ञान का सर्वश्रेष्ठ दर्शन है। भगवान के चरणों में चाहे कोई मेंढक पहुंच जाए अथवा कोई सम्राट पहुंच जाए। दोनों ही अपनी भक्ति के अनुसार श्रेष्ठ फलों को प्राप्त करते हैं।

04 अप्रैल को मुख्य अतिथि के रूप में स्वदेश भूषण जैन अध्यक्ष-पंजाब केसरी, जम्बुप्रसाद जी एवं अनिल गौमल जी रहे। संध्या बेला में सामाजिक संगठनों के नेतृत्व में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गये। शनिवार 05 अप्रैल की प्रातः बेला में 44 मण्डलीय श्री 2008 कल्याण मंदिर महार्चना आयोजित की गयी। महावीर पार्क में आचार्य संघ के सानिध्य में आयोजित महार्चना में यमुनापार से हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने सम्मिलित होकर अनुष्ठान को सफल बनाया। संध्याबेला में गुरु भक्ति, दुडेस् सोल्युशन के पश्चात भजन सम्राट मयूर जैन के द्वारा जन्म कल्यागक अवसर पर भजन संध्या की गयी।

06 अप्रैल की प्रातः नेला से ही कृष्णानगर से कैलाश नगर तक के प्रमुख रास्तों में जैन धर्मानुयायियों की चहल-पहल दिखायी दे रही थी। क्यों? क्योंकि आज कृष्णानगर, शंकर नगर, राजगढ़, शान्ति मौहल्ला, रघुवर पुरा, गाँधीनगर, धर्मपुरा से विशाल रथयात्रा धर्मप्रभावना के साथ कैलाशनगर के श्री महावीर पार्क मैं निर्मित कुण्डलपुर नगरी के विशाल पाण्डाल में जो आनी थी। प्रातः 01:00 बजे से कृष्णानगर जिनालय से रथयात्रा प्रारंभ हुयी जो प्रमुख मार्गों से होते हुयी 12:30 बजे कैलाशनगर के श्री महावीर पार्क में पहुँची। आचार्य संघ की समुपस्थिति में धर्मसभा प्रारंभ हुयी। मुख्य अतिथि के रूप में रहे गांधी नगर के विधायक श्री अरविन्दर सिंह लबली ने कहा - भगवान महावीर स्वामी के बताये सिद्धांतों के अनुशरण से आज भी विश्व में शान्ति और मैत्री की स्थापना हो सकती है।

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 204 विमर्शसागर जी महामुनिराज ने भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक के अवसर पर उपस्थित जन -समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा आज हम सभी भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक को पूरे उत्साह - उल्लास और उमंग के साथ मना रहे हैं। भगवान महावीर स्वामी हमारे शासन नायक तीर्थकर हैं। भगवान महावीर स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के पावन - पवित्र दिवस को हुआ। जब-जब तीर्थंकर भगवान इस धरा पर जन्म लेते हैं तब उनके जन्म से 15 माह पूर्व यानि गर्भ में आने से भी 6 माह पूर्व इन्द्र के द्वारा नगरी की रचना, रत्न वृष्टि आदि अतिशय होने लगते हैं। ठीक इसी प्रकार इस वर्ष 2025 की महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव तो चैत्र शुक्ला त्रयोदशी 10 अप्रैल को लाल किले पर मनायी जायेगी। किन्तु जिस प्रकार भगवान के जन्म कल्याणक की खुशियाँ जन्म से पूर्व ही भव्य जीवों के द्वारा मनायी जाने लगतीं हैं, उसी प्रकार यमुनापार में मनाया जाने वाला यह रथोत्सव भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक के पूर्व होने वाला प्री- जन्म कल्याणक महोत्सव है जो पूर्व से चला आ रहा है और आगे भी इसी तरह चलता रहेगा।

भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक को और कैसे मनाना चाहिए इस पर प्रकाश डालते हुए आचार्यश्री ने कहा- चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन हम सबके लिष्ट परम पवित्र पुण्य दिवस है। इस दिन घर-घर में गीत-संगीत के माध्यम से हर घर में भगवान के जन्म कल्याणक की बधाइया एवं बधाईगीत गुंजायमान होना चाहिए। विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा जिनालय में गली-मोहल्लों में एवं नगर के मुख्य चौराहों पर भगवान महावीर स्वामी के जन्म-कल्याणक के बधाई गीत एवं भगवान के अहिंसा प्रधान संदेश एवं संध्याबेला में घर-घर में जिनालयों में, एवं मुख्य चौराहों पर भगवान महावीर स्वामी की मंगल आरती के आयोजन हर्षोल्लास पूर्वक करते रहना चाहिए।

आचार्य श्री एक और महत्वपूर्ण बिन्दु पर प्रकाश डालते हुए कहा- हमारे समाज की वृद्धि से ही धर्मरक्षा संभव है। अपनी समाज के बीच रहने वाले कुछ ऐसे परिवारों की खोज हमें करते रहना चाहिए जो आर्थिक स्थिति से मजबूत नहीं हैं। ऐसे परिवारों की खोजकर उनके स्वाभिमान की रक्षा करते हुए निष्पृह भाव से उनका सहयोग करना चाहिए ताकि हमारे समाज का हर व्यक्ति हर परिवार धर्म-ध्यान भी निर्विकल्प भाव के साथ कर सकें। यदि भगवान के कल्याणक अवसरों पर हम एक या दो परिवारों का भी सहयोग करते हैं तो अवश्य हीधर्म को मजबूती प्रदान करने में एक हाथ आपका भी होगा।

आचार्यश्री ने अपनी मूल रचना में एक छंद और जोड़ते हुए कहा महावीर का शुभ संदेश, हरा-भरा हो देश-प्रदेश। प्रेम भाव हो हर दिल में रहे न मन में राग-द्वेष। जियो जीने दो, हो-हो-2, हर मन को भाये रे।। जीवन है पानी की बूंद, कब मिट जाये रे॥

100 के. जी. चाँदी से निर्मित होगा श्रीजिन रजत रथ परमपूज्य आचार्य श्री की सन्निधि में कल्याण मंदिर महार्चना के मध्य कैलाशनगर के श्रावक श्रेष्ठी सुभाष जैन (भगत जी) द्वारा सभा के मध्य आहवान किया गया कि इस बार हम रथ माँगकर लाये हैं किन्तु अगली बार श्रीजी हमारे ही रथ में विराजमान होना चाहिए। आह्‌वान के पश्चात् आचार्य, श्री से सभी ने आशीर्वाद की याचना की। आचार्य भगवन्त श्री विमर्श सागर जी द्वारा दान की महिमा पर प्रकाश डाला गया और देखते ही देखते दान-दातारों के नाम आने शुरू हो गये। दूसरे ही दिन 06 अप्रैल को बताया गया कि हमें पूर्ण सफलता मिल चुकी है। कैलाशनगर समाज के वरिष्ठ श्रावक श्रेष्ठीयों ने कहा - हे आचार्य भगवन्! यह सब एक मात्र आपके ही आशीर्वाद का अतिशय है जो एक ही दिन में हमें पूर्ण सफलता मिल गयी है। अब आपके आशीर्वाद - प्रेरणा एवं निर्देशन में हमारे जिनालय का यह रजत रथ तैयार होगा।

राजधानी दिल्ली के लाल किला मैदान में श्री दिगंबर जैन लाल मंदिर के तत्त्वावधान में भगवान महावीर स्वामी की 2624 वाँ जन्म कल्याणक महामहोत्सव 08-09-10 अप्रैल को भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्श सागर जी (ससंघ 37 पीछी) आन्धान श्री श्रुतसागर जी एवं आचार्य श्री अतिवीर जी मुनिराज के सानिध्य में मनाया जा रहा है।

-हर्ष जैन

पश्चिम रेलवे मुंबई मंडल के सूरत रेलवे स्टेशन में विकास कार्यों के चलते कुछ ट्रेनों का परिचालन प्रभावित

रायपुर (विश्व परिवार)। पश्चिम रेलवे मुंबई मंडल के सूरत स्टेशन पर चल रहे विकास कार्यों के फलस्वरूप कुछ ट्रेनों का ठहराव, प्रारंभ/समाप्ति स्टेशन में अस्थायी परिवर्तन किया गया है। इसके अंतर्गत दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से गुजरने वाली निम्नलिखित ट्रेनों का ठहराव व प्रारंभ/समाप्ति अब सूरत स्टेशन के स्थान पर उधना स्टेशन पर होगा 7 विवरण इस प्रकार है-

सूरत के बदले उधना स्टेशन पर ठहरने वाली गाडियाँ- दिनाँक 03 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक अहमदाबाद से चलने वाली गाड़ी संख्या 12833 अहमदाबाद-हावड़ा एक्सप्रेस सूरत के स्थान पर उधना स्टेशन में ठहरेगी 7 इस गाड़ी का उधना स्टेशन आगमन 04.35 बजे तथा 04.40 बजे रवाना होगी। 03 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक पोरबंदर से चलने वाली गाड़ी संख्या 12905 पोरबंदर-शालीमार एक्सप्रेस सूरत के स्थान पर उधना स्टेशन में ठहरेगी 7 इस गाड़ी का उधना स्टेशन में आगमन 21.25 बजे, 21.30 बजे रवाना होगी। 06 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक ओखा से चलने वाली गाड़ी संख्या 22905 ओखा-शालीमार एक्सप्रेस सूरत के स्थान पर उधना स्टेशन में ठहरेगी 7 इस गाड़ी का उधना स्टेशन में आगमन 21.25 बजे, 21.30 बजे रवाना होगी। 04 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक पोरबंदर से चलने वाली गाड़ी संख्या 12949 पोरबंदर-संतरागाछी एक्सप्रेस सूरत के स्थान पर उधना स्टेशन में ठहरेगी 7 इस गाड़ी का उधना स्टेशन में आगमन 21.25 बजे, 21.30 बजे रवाना होगी। 04 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक शालीमार से चलने वाली गाड़ी संख्या 12906 शालीमार-पोरबंदर एक्सप्रेस सूरत के स्थान पर उधना स्टेशन में ठहरेगी 7 इस गाड़ी का उधना स्टेशन में आगमन 01.50 बजे, 01.55 बजे रवाना होगी। 08 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक शालीमार से चलने वाली गाड़ी संख्या 22906 शालीमार-ओखा एक्सप्रेस सूरत के स्थान पर उधना स्टेशन में ठहरेगी 7 इस गाड़ी का उधना स्टेशन में आगमन 01.50 बजे, 01.55 बजे रवाना होगी। 06 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक सांतरागाछी से चलने वाली संख्या 12950 सांतरागाछी-पोरबंदर एक्सप्रेस सूरत के स्थान पर उधना स्टेशन में ठहरेगी 7 इस गाड़ी का उधना स्टेशन में आगमन 03.30 बजे, 03.35 बजे रवाना होगी। 03 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक हावड़ा से चलने वाली गाड़ी संख्या 12834 हावड़ा-अहमदाबाद एक्सप्रेस सूरत स्टेशन के बदले उधना स्टेशन में ठहरेगी 7 इस गाड़ी का उधना स्टेशन 07.39 बजे, 07.45 बजे रवाना होगी।

उधना स्टेशन से प्रारंभ एवं समाप्त होने वाली गाड़ियों का विवरण- दिनाँक 07 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक गाड़ी संख्या 13426 सूरत-मालदा टाउन साप्ताहिक एक्सप्रेस सूरत स्टेशन के बदले उधना स्टेशन से रवाना होगी। दिनाँक 05 अप्रैल 2025 से आगामी आदेश तक मालदा टाउन से चलने वाली गाड़ी संख्या 13425 मालदा टाउन-सूरत साप्ताहिक एक्सप्रेस उधना स्टेशन में समाप्त होगी। रेल प्रशासन यात्रियों से अनुरोध करता है कि यात्रा से पूर्व गाड़ी की समय-सारणी एवं ठहराव संबंधी अद्यतन जानकारी के लिए अधिकृत रेलवे पूछताछ सेवा ह्ज्ञश्वस/139 का उपयोग करें।

38वॉ दीक्षा दिवस : मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज संयम, साधना और चेतना के प्रतीक पुरुष

विदिशा (विश्व परिवार)। महावीर जयंति के शुभ अवसर पर सन 1988 को आचार्य गुरुवर विद्यासागरजी महामुनिराज के कर कमलों से मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज सहित आठ मुनिदीक्षा सोनागिर तीर्थ क्षेत्र पर संपन्न हुई थी। 38वॉ दीक्षा दिवस के शुभ अवसर पर यह लेख प्रस्तुत है। मुनि श्री प्रमाणसागर जी संयम, साधना और चेतना के प्रतीक पुरुष। मुनि प्रमाणसागर जी, वर्तमान युग के उन तेजस्वी दिगंबर जैन संतों में अग्रणी हैं, जिनका जीवन केवल आत्मकल्याण की साधना ही नहीं, अपितु समाज जागरण का ज्वलंत उदाहरण है, उनके जीवन और कार्यों ने न केवल जैन समाज को नई दिशा दी है, बल्कि मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों को भी पुष्ट किया है।वे आचार्य विद्यासागर जी महाराज के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी के रूप में न केवल गुरुवर के तप और तत्त्व को आगे बढ़ा रहे हैं, बल्कि स्वयं एक नई चेतना के प्रवर्तक भी हैं।

जीवन की बुनियाद: तप, त्याग और तत्त्व- मुनि श्री का जीवन संपूर्णतः त्याग, वैराग्य और संयम का पर्याय है। उनका आचरण नग्नत्व, अपरिग्रह, अहिंसा और ब्रह्मचर्य जैसे जैन मूल सिद्धांतों का सजीव अनुकरण है।वे केवल उपदेश ही नहीं देते, बल्कि उन्हें जीकर दिखाते हैं। उनकी जीवन शैली साधना की प्रतिमूर्ति है—जहाँ बाहरी भोग नहीं, बल्कि आंतरिक अनुभूति का सौंदर्य झलकता है।उनकी वाणी में ऐसी करुणा, तार्किकता और आध्यात्मिक ऊर्जा है कि लाखों लोग उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर जीवन की दिशा बदल चुके हैं, वे जटिल दार्शनिक विचारों को इतनी सरलता से व्यक्त करते हैं कि आम व्यक्ति भी आत्म-साक्षात्कार की ओर प्रेरित होता है।

पदयात्रा: धर्म प्रभावना का महायज्ञ- मुनि श्री ने अब तक 50, 000 किलोमीटर से अधिक पदयात्रा करते हुए देश के कोने-कोने में धर्म प्रभावना का अद्वितीय कार्य किया है, ये यात्राएँ केवल धर्म प्रचार नहीं थीं, अपितु जीवन मूल्यों, करुणा और नैतिकता के पुनर्जागरण की जनचेतना थीं। उनके चरण जहाँ-जहाँ पड़े, वहाँ-वहाँ धर्म के साथ-साथ आत्म-जागरण का दीप प्रज्वलित हुआ। यहपदयात्रा भारत के आध्यात्मिक नक्शे पर उनके अमिट प्रभाव की साक्षी है।

नारित्व की सुरक्षा: स्त्री गरिमा का मर्मस्पर्शी चिंतन- मुनि श्री का स्त्री विषयक दृष्टिकोण अत्यंत गहन और संवेदनशील है। वे कहते हैं- नारी की नहीं, नारित्व की सुरक्षा ज़रूरी है। यह कथन मात्र शब्द नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना की गूढ़ दिशा है। उनका मानना है कि जब तक समाज स्त्री के नारित्व अर्थात उसकी गरिमा, उसकी संवेदना, उसकी आत्मिक संरचना-का सम्मान नहीं करेगा, तब तक नारी सशक्त नहीं हो सकती। उन्होंने इस विषय पर अनेक मंचों से स्पष्ट विचार रखे हैं और समाज को सोचने पर मजबूर किया है, भावनायोग: तन, मन और चेतना का संतुलनकारी विज्ञानमुनि श्री की अनुपम देन भावनायोग एक ऐसी अद्वितीय साधना पद्धति है, जो व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्तर पर संतुलन प्रदान करती है। यह योग कोई शारीरिक कसरत नहीं, बल्कि अंतर्मन की दिशा बदलने वाला वैज्ञानिक प्रयोग है। इसका उद्देश्य है—तन को स्वस्थ बनाना, मन को मस्त (उत्साही व शांत) बनाना, चेतना को प्रशस्त करना (आत्मा की ओर उन्मुख करना)।

इसके चार चरण हैं प्रार्थना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और सामायिक जिनके माध्यम से साधक को एक सकारात्मक भावनात्मक ऊर्जा में ढाला जाता है। आधुनिक न्यूरोसाइंस, साइकोथेरेपी और माइंडफुलनेस की दृष्टि से यह पद्धति मनोवैज्ञानिक री-प्रोग्रामिंग की प्रक्रिया से व्यक्ति के अवचेतन को शुद्ध करती है। आज लाखों लोगों ने इसके अभ्यास से अपने जीवन में आत्म-विश्वास, शांति और स्थिरता का अनुभव किया है। शंका समाधान: संवाद से समाधान की ओर दयोदय महासंघ के प्रवक्ता अविनाश जैन ने कहा कि मुनि श्री का शंका समाधान कार्यक्रम आज के युग की आत्मिक जिज्ञासाओं का सटीक उत्तर है। **-अविनाश जैन**

दिगंबर जैन समाज द्वारा बहु प्रतिक्षित नाटिका वीतरागी महाभारत का मंचन

दुर्ग (विश्व परिवार)। भगवान महावीर का 2624वॉ जन्म महोत्सव अनेक कार्यक्रमों के साथ गंज मंडी प्रांगण में हर्ष और उल्लास के वातावरण में मनाया जा रहा है। इसी क्रम में दिगंबर जैन समाज के सभी वर्ग के सदस्यों के साथ मिलकर लगातार एक माह की मेहनत के पश्चात कल रात्रि 8:30 बजे गंज मंडी प्रांगण में बहु प्रतिक्षित नाटिका वीतरागी महाभारत का मंचन किया गया। इस नाटिका को देखने के लिए दिगंबर समाज के साथ-साथ सकल जैन समाज की उपस्थित देखने लायक थी श्री भुरीबाई जैन दिगम्बर पाठशाला के बैनरतले आयोजित वीतरागी महाभारत के हर पात्रों का प्रदर्शन तारीफे काबिल था।

अर्जुन भीम नकुल सहदेव युधिष्ठिर श्री कृष्ण सकुनि कुंती ओर द्रौपदी के पात्रों का अभिनय उपस्थित जनसमुदाय में बेहद सराहा सभी पत्रों के भाव भंगिमा चेहरे की बनावट और हर पत्रों का अभिनय कौशल देखते ही बन रहा था ऐसा महसूस किया जा रहा था की देश के प्रोफेशनल कलाकारों के द्वारा ऐसी प्रस्तुति दी जा रही है इस वीतरागी महाभारत में अभिनय करने वाले पात्रों का दूर-दूर तक अभिनय मंचन से कोई लेना-देना नहीं है सभी पात्र या तो व्योपारी है या ग्रहस्त गृहिणी हैं और स्कूल कॉलेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने अपनी शानदार कला कौशल का ऐसा प्रदर्शन किया जिसे उपस्थित जन समुदाय ने अंत:करण से भूरी भूरी प्रशंसा की।

लगातार एक माह की महेनत के बाद वीतरागी महाभारत के पात्र जैन समाज में उभरकर सामने .आए जिसका एकमात्र सशक्त शक्ति के रुप में स्नेहिल बिट्ठू बाकलीवाल की महेनत रंग लाई इस आयोजन को जीवंत रूप देने के लिए श्री डा अजय जगत श्री रोहित श्रीवास्तव तन्मय शर्मा के निर्देशन में प्रस्तुति देने वाले पत्रों का मेकअप एवं ड्रेस सजा इस आयोजन का प्रमुख केंद्र रहा शुभम जैन, पल्लवी बाकलीवाल निलीमा बाकलीवाल की महेनत के बल पर वीतरागी महाभारत जन समुदाय के बीच प्रस्तुत की गई। इस कार्यक्रम की एक खास बात यह रही वितरागी महाभारत के निर्देशक श्री रोहित श्रीवास्तव को छत्तीसगढ़ी फिल्मों में मुख्य पात्र का रोल छोड़कर उन्होंने जैन समाज के साथ जुड़कर अपनी सेवा दी ओर इस नाटक को शानदार प्रस्तुति से भव्य रूप प्रदान किया जिसकी जैन समाज में उत्कृष्ट कार्य की सराहना हो रही है। इस आयोजन में दिगंबर जैन समाज के ज्ञानचंद पाटनी, कैलाश बाकलीवाल भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति के पदाधिकारी अजय श्री श्रीमान चुन्नीलाल जैन किशोर जैन संदीप जैन रितेश बुरड़ मनोज बाकलीवाल पीयूष पारख राजा कांकरिया एवं प्रकाश गोलछा ने भगवान जन्म कल्याणक महोत्सव के सभी कार्यक्रमो में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की है।

आज ऋषभ संभव की भक्ति गंज मंडी प्रांगण में प्रातः 6 बजे गया नगर दुर्ग से अहिंसा यात्रा प्रभात फेरी निकल गई जो गया नगर चंडी मंदिर गांधी चौक जवाहर चौक महावीर कॉलोनी खंडेलवाल कॉलोनी ऋषभ कॉलोनी होते हुए नवकार भवन में समापन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में मुंबई के ख्याति नाम भजन गायक दो भाइयों की जोड़ी ऋषभ संभव जैन की भक्ति का आज संपूर्ण जैन समाज लाभ लेगा। **-नवीन संचेती**

सरला कमल देवांगन के नेतृत्व में बीरगांव में निकाली गई शिव शक्ति कलश यात्रा

बीरगांव (विश्व परिवार)। देवांगन समाज की कुल देवी मां परमेश्वरी का पूजा अर्चना चैत्र नवरात्र की अष्टमी में किया गया। इस अवसर पर सरला कमल देवांगन के नेतृत्व में गाजे बाजे के साथ शिवशक्ति कलश शोभायात्रा निकाली गई जिसमे शिव और शक्ति का औषधियुक्त जल से अभिषेक कर रथ पर विराजित किया गया। कार्यक्रम के आयोजन सरला कमल देवांगन के सान्निध्य में बिरगांव स्थित बुधवारी बाजार में शिव शक्ति आराधना की गई। जिसमे गाजे बाजे के साथ निकाली शोभा कलश यात्रा में महिलाएं सिर पर मंगल कलश धारणकर शामिल हुईं। मां परमेश्वरी देवी की पूजा अर्चना कर यात्रा व्यास तालाब चौक से वापस बुधवारी बाजार पहुंची जहां मंगल कलश की स्थापना की गई। इसके पश्चात रंग झरोखा की कलाकार रिंकी देवांगन की टीम ने भजनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष रमेश सिंह ठाकुर, बिरगांव मंडल अध्यक्ष योगेश साहू, माता बंजारी मंडल अध्यक्ष भागीरथी यादव, एवज देवांगन, भीखम लाल देवांगन, विनोद देवांगन, हेमंत देवांगन, रवि देवांगन, मनोहर देवांगन के अलावा बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

छत्तीसगढ़ की नई धमनी बनेगी...पेज-1 का शेष

साथ ही राजनांदगांव से नागपुर तीसरी लाइन, झारसुगड़ा से बिलासपुर चौथी लाइन, रायपुर-केन्द्री-धमतरी से अभनपुर-राजिम लाइन का गेज कन्वर्जन करके ब्रॉड गेज बनाया जा रहा है। राजनांदगांव से डोंगरगढ़ चौथी लाइन, जगदलपुर से कोरापुट की डबलिंग, धरमजयगढ़ से कोरबा नई लाइन, अनूपपुर से अंबिकापुर के दोहरीकरण के लिए पर्याप्त फंड दिए गए हैं। रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि छत्तीसगढ़ के लोगों ने जिन उम्मीदों के साथ डबल इंजन की सरकार बनाई है, उसे पूरा करने का काम भारतीय रेल कर रही है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्वनी वैष्णव को धन्यवाद देते हुए कहा कि खरसिया-नया रायपुर-परमलकसा रेल परियोजना जैसी महत्त्वपूर्ण सौगात से छत्तीसगढ़ के विकास को एक नई गति मिलेगी। यह रेल परियोजना जांजगीर-चांपा, सक्ती, बलौदा बाजार, रायपुर, दुर्ग और राजनांदगांव जैसे प्रमुख जिलों को जोड़ेगी। इससे इन जिलों के नए अवसर मिलेंगे। लोगों को रोजगार मिलेगा। बलौदाबाजार और जांजगीर अब उद्योगों के लिए नया हब बनकर उभरेंगे। यह क्षेत्र लाइमस्टोन (चूना पत्थर) से समृद्ध है। रेल संपर्क बेहतर होने से यहां सीमेंट उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि नया रायपुर तक सीधी रेल लाइन से राजधानी का संपर्क मुंबई और कोलकाता जैसे महानगरों से और बेहतर होगा। परियोजना से माल परिवहन तेज होगा, जिससे उद्योगों की लॉजिस्टिक लागत में कमी आएगी। इससे कृषि उत्पादों, खनिजों और निर्माण सामग्री के ट्रांसपोर्ट को भी बल मिलेगा। इससे नया रायपुर के विकास को नई दिशा और रफ्तार मिलेगी।

केन्द्रीय आवासन एवं शहरी राज्यमंत्री श्री तोखन साहू ने छत्तीसगढ़ राज्य के लिए मंजूर किए गए इस परियोजना के लिए खुशी जाहिर करते हुए समस्त छत्तीसगढ़ के निवासियों की तरफ से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं केंद्र सरकार का धन्यवाद किया।

जगदलपुर विधानसभा के चिंगपाल में दीदी मंडई कार्यक्रम में शामिल हुयें भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक किरण देव

हमारी महिला बहने हर क्षेत्र में हो रही आत्मनिर्भर किरण देव

जगदलपुर (विश्व परिवार)। जगदलपुर विधानसभा क्षेत्र के दरभा मंडल में चिंगपाल पंचायत में दीदी मंडई का आयोजित कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव शामिल होकर महिला दीदियों को संबोधित करते हुये कहा स्व सहायता समूह के माध्यम से हमारे पंचायत के महिला दीदी अपने अपने कार्य क्षेत्र में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं को प्रोत्साहित कर वर्षभर पंचायत स्तर पर आयोजन कर महिला बहनों को जोड़कर कार्य करते रहतें है। हमारे महिला दीदियों का सराहनीय कार्य है। स्वालंबी बन रही है ,खेती , सब्जी लगाने,राशन दुकान व अन्य माध्यमों से मेहनत कर आगे बढ़ रहे हैं। शासन के योजनाओं का लाभ लेकर आगे बढ़ रहे हैं । सभी काफी मेहनत करते अपने अपने कार्य क्षेत्र उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। आज के दीदी मंडई कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव का महिला दीदियों ने बस्तर के पारंपरिक रूप से स्वागत व अभिनंदन किया। जिसके पश्चात तीरथधारा महिला संघ के महिला दीदियों ने बताया दस पंचायत का एक क्लस्टर बनाकर स्व सहायता समूह की महिला दीदियों के द्वारा वर्षभर पंचायत स्तर पर पंचायत स्तर विभिन्न आयोजन कर महिला बहनों को प्रोत्साहित करने का कार्य किया जाता है। तीरथधारा महिला संध के पदाधिकारियों ने बताया शासन से प्रत्येक पंचायत को नये नये कार्य करने के लिए राशि प्राप्त होती है जिसमें महिला बहने संगठित होकर समूह के माध्यम से अलग अलग स्तर पर हाट-बाजार, सब्जी की खेती ,मुर्गी पालन,बकरी पालन ,राशन दुकान व अन्य माध्यमों से पैसे कमाकर अपना आय के स्त्रोत बढ़ा रही है । भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव ने संबोधित करते कहा आज महिलाएं स्वावलंबी बनते हर क्षेत्र में कार्य कर आत्मनिर्भर बन रही है। सभी महिला बहनों को बधाई एवं शुभकामनाएं, हमारी विष्णु देव साय की सरकार महिला दीदियों के लिए विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं को लागू किया गया है। शासन की योजनाओं का लाभ लेते हमारी महिला दीदी अपने अपने पंचायत पर महिलाओं को आत्मनिर्भर बना रही है । तीर्थधारा महिला संध हर क्षेत्र में सक्रिय हैं । खेती ,राशन दुकान,सब्जी लगाने का कार्य हमारी महिला बहनों के द्वारा किया जा रहा है। इस दौरान जनपद उपाध्यक्ष हरिप्रसाद कश्यप, सरपंच चिंगपाल जयराम, लिबरूराम ,सोनधर कश्यप मंडल अध्यक्ष देवीप्रसाद बेंजाम,फूलसिंग सेठिया, धमेंद्र ठाकुर, उदय दुबे,सुरेश सिंह,दिनेश पांडे, सीईओ वीरेन्द्र बहादुर,व काफी संख्या में महिला बहने उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

नक्सल लीडर प्रभाकर के दो सहयोगी गिरफ्तार

कांकेर(विश्व परिवार)। कांकेर जिले में पुलिस ने नक्सल लीडर प्रभाकर के दो सहयोगियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए नक्सलियों की पहचान रमेश कुमार और चिन्तु ताम्रकार के रूप में हुई है। दोनों आरोपी नक्सली प्रभाकर के साथ अनेक घटनाओं में शामिल रहे हैं। उन पर प्रभाकर को इलाज के लिए शहर ले जाने और उसकी पत्नी रावघाट एरिया कमेटी कमांडर राजे कांगे को आश्रय देने का आरोप है। पुलिस ने इन दोनों को गिरफ्तार कर मामले की जांच शुरू कर दी है। वहीं, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने हाल ही में दंतेवाड़ा में सुरक्षा बलों के जवानों से मुलाकात की और उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि बस्तर अब लाल आतंक से बाहर निकलकर उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है। इस बदलाव का श्रेय हमारे वीर जवानों की बहादुरी और उनके सतत प्रयासों को जाता है। डीआरजी, कोबरा बटालियन, छत्तीसगढ़ पुलिस और पैरा मिलिटरी फोर्सेस ने इस सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अमित शाह ने बस्तर क्षेत्र में सुरक्षा कैम्पों की स्थापना को लेकर भी खुशी जताई, जिसके परिणामस्वरूप कई गांव नक्सल मुक्त हो रहे हैं। इसके अलावा, उन्होंने नक्सली हिंसा में घायल जवानों के इलाज के लिए रायपुर और जगदलपुर में विशेष अस्पतालों की स्थापना की घोषणा की। इस मौके पर गृहमंत्री ने जवानों से आत्मीय बातचीत की और कहा कि सरकार हर परिस्थिति में उनके साथ खड़ी है। साथ ही, उन्होंने बस्तर पण्डूम जैसे सांस्कृतिक आयोजनों की सराहना करते हुए कहा कि यह आयोजन बस्तर की कला, संस्कृति, खानपान, वेशभूषा, आभूषण, नृत्य और संगीत को देश-विदेश तक पहुँचाने का एक बेहतरीन मंच है।

दिव्यांगजनों के लिए आयोजित हुआ आंकलन शिविर

रायगढ़(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल के निर्देशन में समाज कल्याण विभाग द्वारा दिव्यांगजनों को शासन की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करने एवं उनके सुविधा हेतु जिले के समस्त विकास खंडों में कलस्टर स्तर पर दिव्यांगजनों का चिन्हांकन एवं यूडीआईडी प्रमाणीकरण तथा सामाजिक सहायता अंतर्गत समाधान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसके तहत धरमजयगढ़ के विकासखण्ड मुख्यालय के स्वास्थ्य केन्द्र कापू तथा लैलूंगा विकास खंड के मुकडेगा में दिव्यांगजनों का आंकलन, चिन्हांकन यूडीआईडी प्रमाण पत्र शिविर का आयोजन किया गया। इसी कड़ी में आगामी 8 अप्रैल को घरघोड़ा विकासखंड मुख्यालय के स्वास्थ्य केंद्र में शिविर का आयोजन किया जाएगा। 4 अप्रैल को घरघोडा विकासखंड अंतर्गत कुडुमकेला के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें जिला मुख्य चिकित्सालय से अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ.डोलेश्व पटेल, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ.नवीन अग्रवाल, फिजियोथैरेपिस्ट श्याम जीत किंडो, नेत्र सहायक अधिकारी डॉ.अर्जुन कुमार बेहरा, ऑडियोलॉजिस्ट चक्रधर पटेल, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ.अभिषेक अग्रवाल, अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ.आर.के.गुप्ता, डॉ.सिद्धार्थ सिन्हा सहित विशेष चिकित्सकों की टीम ने अपनी सेवाएं दी। आयोजित शिविर में 58 दिव्यांग जनों की उपस्थिति दर्ज की गई। आयोजित शिविर में समाज कल्याण विभाग के अधिकारी द्वारा दिव्यांगता के 21 प्रकार पर प्रकाश डाला गया साथ ही नशा मुक्त भारत अभियान के तहत नशे से होने वाली खतरनाक जानलेवा बीमारियों के बारे में जानकारी देते हुए नशा मुक्त रहने के लिए शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत घरघोड़ा अर्चना मिंज, डॉ. पैकरा,बीआरपी श्रीमती गुरुवारी भारद्वाज एवं जनपद पंचायत की टीम उपस्थित रहे।

गांजा तस्करी करने वाले 02 युवक पर बस्तर पुलिस की बड़ी कार्रवाई

जगदलपुर (विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक, शलभ कुमार सिन्हा के नेतृत्व में बस्तर पुलिस के द्वारा अपराधिक तत्वों के विरूद्ध लगातार कार्यवाही किया जा रहा है। इसी तारतम्य में अवैध मादक पदार्थ गांजा तस्कर पर, कार्यवाही करने में बस्तर पुलिस को सफलता मिली है। ज्ञात हो कि थाना बोधघाट जगदलपुर को सूचना प्राप्त हुआ था कि दो व्यक्ति बस स्टैंड में शुलभ शौचालय के पास दो पिट्ठू बैग रखे खडे है, एक लड़का काला सफेद चेक दार नीला जींस तथा दूसरा लड़का लाल काला चेक दार खुला शर्ट अंदर टी शर्ट पहना हैं, जिसके कब्जे में दो पिट्ठू बैग है ,जिसमें से मादक पदार्थ गांजा जैसे महक आ रही हैं, ऐसा लग रहा है कि झोला के अंदर गांजा हैं, और बिक्री करने के लिए ग्राहक का इंतजार कर रहा हैं, कि सूचना पर पुलिस अधीक्षक, शलभ कुमार सिन्हा के मार्गदर्शन में अति. पुलिस अधीक्षक माहेश्वर नाग के मार्गदर्शन एवं नगर पुलिस अधीक्षक आकाश श्री श्रीमाल के पर्यवेक्षण में थाना प्रभारी बोधघाट लीलाधर राठौर के नेतृत्व में टीम गठित कर, कार्यवाही हेतु टीम रवाना किया गया था। उक्त टीम के द्वारा बस स्टैंड जगदलपुर में पहुंचकर घेराबंदी कर, संदेह के आधार पर बताये हुलिया के दो लडके बस स्टैंड शुलभ शौचालय के पास में मिलने पर उक्त व्यक्तियों को पकड़कर, पूछताछ करने पर अपना अपना नाम (1) दीपक कुमार पिता दिनेश कुमार उम्र 26 वर्ष (2) अरविन्द पिता महेंद्र कुमार उम्र 20 वर्ष दोनों निवासी ग्राम डूंगर थाना रोहता जिला मेरठ (उ. प्र.) का होना बताये जिनके पास में रखे दो पिट्ठू बैग की तलाशी लेने पर 20.495 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा मिला। जिसके संबंध में पूछताछ करने पर वैधानिक प्रत्युत्तर नही दिया गया आरोपीगण द्वारा अवैध मादक पदार्थ गांजा परिवहन करना स्वीकार करने से उक्त दोनों आरोपी को 20(।)(।।)(सी) एनडीपीएस एक्ट के तहत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड में भेजा गया। महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले अधिकारी–

निरीक्षक – लीलाधर राठौर
उनि. – अरुण मरकाम, प्रमोद ठाकुर
स उ नि – दिनेश उसेंडी, सतीश श्रीवास्तव,सुजाता नायडू, गोदावरी नागवशी
प्र.आर. – सुनील मनहर, नितेश मेश्राम, सोनामनी मंडावी
आरक्षक – रामकुमार, नारायण कलामे,कामदेव दर्रो, प्रकाश नायक।

अपना स्टार्टअप शुरू करने हेमल को मिला लगभग साढ़े तीन करोड़ रुपये का लोन

भारत मंडपम दिल्ली में हेमल ने किया अपने फ़ूड उत्पादों का प्रदर्शन

धमतरी(विश्व परिवार)। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने राज्य के आर्थिक विकास को गति देने तथा उद्यामियों को उद्योग स्थापित करने में सहयोग करने हेतु औद्योगिक नीति की शुरुआत की है, जिसका लाभ जिले के नये उद्यामियों को भी मिल रहा है। अभी हाल ही में भारत का सबसे बड़ा स्टार्टअप इवेंट का दूसरा एडिशन बीते 3 से 5 अप्रैल तक नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में आयोजित किया गया था, जिसमे धमतरी जिले से आईएफसीआई वेंचर कैपिटल फंड्स के अनुसूचित जनजाति के लिए उद्यम पूंजी कोष के पहली लाभार्थी और स्टार्टअप हेमल फ़ूड प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड की श्रीमती जयंती सिदार ने भारत मंडपम में अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके, आईएफसीआई वेंचर कैपिटल फंड्स के एमडी वी. अनीश बाबू और डीजीएम आईएफसीआई अरिंदम रॉय ने हेमल फ़ूड के स्टाल का अवलोकन किया और व्यवसाय की जानकारी ली। उपस्थित अतिथियो ने इस व्यवसाय के लिए हेमल फ़ूड को 3.40 करोड़ का ऋण प्रदान किया और हेमल फ़ूड के व्यवसाय की सफलता के लिए अग्रिम बधाइयाँ दीं। कलेक्टर अबिनाश मिश्रा में जयंती सिदार को बधाई देते हुए कहा जिले में औद्योगिक नीति के तहत फूड पार्कों की स्थापना की जा रही है, जिसमें उद्योग स्थापित करने में जिला प्रशासन द्वारा हर संभव सहयोग दिया जा रहा है। फूड पार्क में सड़क बिजली पानी सहित अन्य मूलभूत सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

विधायक किरण देव के समक्ष नानगुर मंडल के सैकड़ों युवाओं ने किया भाजपा प्रवेश

जगदलपुर(विश्व परिवार)। बस्तर जिला मुख्यालय के भाजपा जिला कार्यालय में नानगुर मंडल के सैकड़ों युवाओं ने अविनाश सिंह के नेतृत्व में शुक्रवार को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं जगदलपुर विधायक किरण देव के समक्ष भाजपा प्रवेश किया प्रवेश करने वाले युवाओं को विधायक किरण देव ने पटका पहनाकर भाजपा में प्रवेश करवाया। युवाओं को संबोधित करते हुए किरण देव ने कहा आप सभी युवाओं का भाजपा में स्वागत है। आप जिस मण्डल में निवासरत है, वहां के मंडल अध्यक्ष से मिलकर नियमानुसार प्राथमिक सदस्यता ग्रहण कर सूची बद्ध तरीके अपना नाम दर्ज करवाएं। उन्होने कहा कि भाजपा प्रवेश का तभी मतलब है, जब आप पार्टी के संगठन को मजबूत करने का काम करेंगे। आप अच्छा काम करेंगें तो आगे चलकर पार्टी में आप आगे बढ़ेंगे। इस अवसर पर भाजपा के पूर्व जिलध्यक्ष विधाशरण तिवारी ने भी भाजपा के नव प्रवेषी सदस्यों कों सम्बोधित किया। इस दौरान मंडल अध्यक्ष प्रकाश झा, मनोहर तिवारी, आर्यन आर्य, प्रकाश रावल, अविनाश सिंह, संजय चन्द्राकार, मनोज जंगम सहित अन्य भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

कलेक्टर नीलेश महादेव ने किया शिक्षण संस्थानों का निरीक्षण, छात्राओं को मिलेगी बस की सुविधा

कांकेर(विश्व परिवार)। कलेक्टर नीलेश महादेव क्षीरसागर ने आज स्थानीय इमलीपारा स्थित नर्सिंग कॉलेज का निरीक्षण किया। उन्होंने परिसर में निर्माणाधीन बाउंड्री वॉल का जायजा लिया और प्रथम वर्ष की छात्राओं से बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनीं। छात्राओं ने मुख्य रूप से कॉलेज आने जाने के लिए बस सुविधा की मांग की, जिस पर कलेक्टर ने उन्हें जानकारी दी कि बस की स्वीकृति मिल चुकी है। कलेक्टर ने आदिवासी विकास विभाग की सहायक आयुक्त को परिसर में सीसीटीवी कैमरे लगाने के निर्देश भी दिए, ताकि सुरक्षा व्यवस्था को और बेहतर बनाया जा सके। इसके बाद कलेक्टर ने संयुक्त एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय इमलीपारा का भी भ्रमण किया। उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए उन्हें पढ़ाई के महत्व के बारे में बताया और प्रेरित किया कि वे परिश्रम कर देश-विदेश में नाम रोशन करें। इस दौरान कक्षा 12वीं की छात्रा कुमारी तारा जाड़े ने गोंडी भाषा में स्वागत गीत प्रस्तुत किया, जिस पर उपस्थित अधिकारियों ने उसकी सराहना की। इसके बाद कलेक्टर क्षीरसागर ने नाथिया नावागांव स्थित पॉलिटेक्निक कॉलेज का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इसके उपरांत उन्होंने लखनपुरी में निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज का भी निरीक्षण किया। कलेक्टर ने निर्माण कार्य की प्रगति की जानकारी ली और गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध कार्य करने के निर्देश दिए।

निर्माणे कार्यों में तेजी लाकर एक माह के भीतर पूर्ण करें : कलेक्टर प्रतिष्ठा

नारायणपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर प्रतिष्ठा ममगाईं और जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी आकांक्षा शिक्षा खलखो द्वारा आज जिला कार्यालय के सभा कक्ष में लोक निर्माण विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, पीएमजेएसवाई, आदिवासी विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, जल संसाधन, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा विभाग अंतर्गत किये जा रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक ली गई। उन्होंने समीक्षा करते हुए आश्रम छात्रावास, आंगनबाड़ी, उप स्वास्थ्य केन्द्र, स्कूल भवन, निर्माणाधीन सड़क एवं पुल-पुलियों के निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए एक माह के भीतर पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने पुराने स्वीकृत कार्यों को प्रारंभ नहीं किये जाने की स्थिति में उनके निविदा को निरस्त करने निर्देशित किया। कलेक्टर ने उप स्वास्थ्य केन्द्र, आरसीसी पुलिया निर्माण, बाउंड्रीवाल निर्माण, सड़क निर्माण, विद्यालय के अतिरिक्त कक्ष निर्माण सहित सभी निर्माण कार्यों में प्रगति लाने के निर्देश दिये। उन्होंने निर्माण कार्यो की समीक्षा करते हुए कहा कि संबंधित जनपद सीईओ अपने-अपने क्षेत्र के ग्राम पंचायतों के सरपंच सचिवों की बैठक लेकर निर्माण कार्यों को पूर्ण कराएं। उनके द्वारा जिले के पहुंचविहीन क्षेत्रों में स्वीकृत किये गये निर्माण कार्य प्रारंभ नहीं होने की स्थिति में एजेंसियों को बदले जाने के निर्देशित किये गये। कलेक्टर ने उप अभियंता और तकनिकी सहायकों को हिदायत देते हुए स्वीकृत निर्माण कार्य में तेजी लाने निर्देशित किया। उन्होंने अधूरे प्राथमिक शाला, उप स्वास्थ्य और आंगनबाड़ी केन्द्रों को एक माह के भीतर स्वीकृत निर्माण कार्यों का राशि एजेंसियों को जारी करने के निर्देश दिये। समीक्षा करते हुए नियद नेल्लानार अंतर्गत कुतुल, होरादी, मसपुर, गारपा, ईरकभट्टी, कच्चापाल आदि ग्रामों में किये जा रहे निर्माण कार्यो में तेजी लाने के निर्देश दिये। उन्होंने खेल मैदान, सोलर लाईट, आंगनबाड़ी, उप स्वास्थ्य केन्द्र, स्कूल भवन, निर्माणाधीन सड़क एवं पुल-पुलियों के निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए आमासरा से माहका तक सड़क, सामुदायिक भवन कुतुल और होरादी में चल रहे कार्यों को एक माह के भीतर पूर्ण करने के निर्देशित किये। कलेक्टर ने निर्माण कार्यों की सरपंच सचिवों के द्वारा निकाले गए राशि को वसूली किये जाने संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने निर्माण कार्यों के स्थलों का परिवर्तन किये जाने जिला कार्यालय के निर्माण समिति को सूचित करने निर्देश दिये। उन्होंने नीति आयोग के माध्यम से स्वीकृत किये गए आश्रम छात्रावास, विद्युतीकरण, शौचालय निर्माण, अतिरिक्त कक्ष निर्माण, सामग्री खरीदी सहित विभिन्न कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराने निर्देशित किया। उन्होंने नियद नेल्लानार योजना अंतर्गत क्रेडा विभाग के सोलर हाईमास्क को शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश दिये। कलेक्टर ममगाईं ने कृषि विज्ञान केन्द्र केरलापाल पहुंच मार्ग, डुंगा, रेकावाया के स्कूल छात्रावास निर्माणधीन भवनों को शिक्षा सत्र प्रारंभ होने के पूर्व पूर्ण करने के निर्देश दिये। पोर्टाकेबिन देवगांव में पानी की समस्या को निराकरण करने के लिए कार्य योजना तैयार करने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कार्यपालन अभियंता को निर्देश दिये। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को समय समय पर कार्यों की प्रगति की समीक्षा करने निर्देशित किया।

व्यापार समाचार

भारत में जल्दी एयर टैक्सी शुरू करेगी सरला एविएशन

नई दिल्ली(एजेंसी)। उभरते हुए एयरोस्पेस स्टार्टअप सरला एविएशन ने इस साल की शुरुआत में दिल्ली में भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2025 के दौरान अपनी एयर टैक्सी को दुनिया के सामने पेश किया था। अब कंपनी का लक्ष्य जल्द ही देश के कुछ प्रमुख शहरों में एयर टैक्सी का कमर्शियल संचालन शुरू करना है। सरला एविएशन के सह-संस्थापक और सीईओ एड्रियन ने आईएएनएस से कहा, भारत को वर्तमान परिवहन व्यवस्था से बेहतर प्रणाली की आवश्यकता है। हम मानते हैं कि भारत को एक बेहतर प्रणाली की आवश्यकता है, जो वर्तमान में मौजूद नहीं है। इस विचार से एयर टैक्सी का ख्याल आया, जो भविष्य में सार्वजनिक परिवहन का अहम हिस्सा बन सकता है। एड्रियन ने यह भी बताया कि इस विचार के पीछे विकसित भारत का सपना है, जिसमें यातायात जाम जैसी समस्याएं खत्म हो जाएं। उन्होंने कहा कि एयर टैक्सी, जिसे एयरलाइन या हेलिकॉप्टर जैसे पारंपरिक वाहनों की तुलना में अधिक स्मार्ट, किफायती और सुविधाजनक माना जाता है, को दैनिक जीवन में स्कूलों, मॉल, अस्पतालों और हवाई अड्डों जैसे संगठित स्थानों को जोड़ने के लिए उपयोग किया जाएगा। यह प्रणाली पॉइंट-टू-पॉइंट ट्रांसपोर्ट नेटवर्क बनाने में मदद करेगी, जिससे शहरों में यातायात की समस्या को कम किया जा सकेगा। सरला एविएशन ने अब तक अपनी कंपनी के लिए 1.2 करोड़ डॉलर की पूंजी जुटाई है, जो विभिन्न वेंचर कैपिटल फर्मों और एंजल निवेशकों से प्राप्त हुई है। हालांकि, कंपनी भविष्य में अपने मार्केट में विस्तार के लिए अतिरिक्त निवेश जुटाने की योजना बना रही है। इसके बावजूद, सरला एविएशन वर्तमान में वित्तीय रूप से मजबूत स्थिति में है और भविष्य में भारत के प्रमुख शहरों में एयर टैक्सी संचालन शुरू करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। एड्रियन ने विकसित भारत के दृष्टिकोण को लेकर भी अपनी बात रखी। उन्होंने बताया कि भारत में ट्रैफिक जाम को समाप्त करने का एकमात्र समाधान एयर टैक्सी के रूप में संभव हो सकता है। सरला एविएशन के सह-संस्थापक ने यह भी बताया कि भारत में अन्य देशों की तुलना में परिवहन प्रणालियां, जैसे कार, ट्रेन और मेट्रो, उतनी प्रभावी नहीं हैं। उन्होंने इसके पीछे की वजह भारत का उच्च जनसंख्या घनत्व बताया, जिसके कारण लोगों को कम स्थान में अधिक भीड़ के साथ रहना पड़ता है। यही कारण है कि वे एयर टैक्सी को विकसित भारत की रीढ़ मानते हैं। सरला एविएशन की सफलता में भारतीय निवेशकों की महत्वपूर्ण भूमिका है, और एड्रियन इसे लेकर बेहद खुश हैं। उन्होंने कहा, हमारे अधिकांश निवेशक भारतीय हैं, और हमें गर्व है कि हमें भारत के कुछ सबसे उज्ज्वल दिमागों से समर्थन मिल रहा है, जिन्होंने इस देश में कुछ बेहतरीन कंपनियां बनाई हैं। इसके अलावा, उन्होंने भारत सरकार के दृष्टिकोण की भी सराहना की, जो तकनीकी कंपनियों को भारत में उभरने के लिए प्रेरित करती है। एड्रियन ने अंत में कहा कि भारत सरकार का नेतृत्व और सरकार का विश्वास ही है, जो ऐसी तकनीकी कंपनियों को यहां स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा, सरकार का विश्वास ही इस प्रकार की कंपनियों को देश में काम करने के लिए उत्साहित करता है।

नैसकॉम फाउंडेशन और एचएसबीसी इंडिया मिलकर महिला उद्यमियों को देंगे डिजिटल का प्रशिक्षण

कोलकाता(एजेंसी)। ग्रामीण महिला उद्यमियों को डिजिटल अर्थव्यवस्था में सशक्त बनाने के लिए नैसकॉम फाउंडेशन ने एचएसबीसी इंडिया के साथ साझेदारी की है। इस पहल के तहत दिल्ली, कर्नाटक, तेलंगाना, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में 4000 महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा। महिला उद्यमियों को कौशल प्रदान करना और डिजिटल अर्थव्यवस्था में उनकी भागीदारी बढ़ाना नामक इस कार्यक्रम में महिलाओं को डिजिटल और वित्तीय साक्षरता, उद्यमिता विकास, व्यवसाय प्रबंधन और ई-गवर्नेंस जैसी जरूरी स्किल्स सिखाई जाएँगी। साथ ही, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर उनकी मौजूदगी बढ़ाने और कारोबार को डिजिटल रूप से मजबूत करने में भी मदद की जाएगी। सीमित डिजिटल और वित्तीय साक्षरता ग्रामीण महिला उद्यमियों के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। इसकी वजह से वे डिजिटल टूल्स और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स का पूरी तरह से लाभ नहीं उठा पाती हैं, जिससे उनके कारोबार का विकास रुक जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा संचालित उद्यमों ने 2.2 से 2.7 करोड़ लोगों को रोज़गार दिया है, लेकिन महिला उद्यमियों को अब भी औपचारिक ऋण प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही, उनके लिए मिड-स्केल ग्रोथ को बढ़ावा देने वाली नीतियों की कमी है और उन्हें मार्केटिंग, टेक्नोलॉजी और बिज़नेस एडवाइज़री जैसी जरुरी सुविधाएँ भी नहीं मिल पाती हैं। यह पहल महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने, उनके जीवनयापन को बेहतर करने और तकनीकी समाधानों के माध्यम से उनकी उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई है।नैसकॉम फाउंडेशन की सीईओ, ज्योति शर्मा ने कहा, आर्थिक भागीदारी में लैंगिक असमानता अब भी गहराई से जड़ें जमाए हुए है और समानता हासिल करने में यह एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। यह पहल इस अंतर को खत्म करने के हमारे संकल्प को दर्शाती है। तकनीक ने समावेशन को बढ़ावा देने और समान अवसर उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभाई है, और हम डिजिटल समावेशन को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, ताकि महिलाओं की आजीविका, आर्थिक सुरक्षा और आत्मनिर्भरता मजबूत हो। एचएसबीसी इंडिया के साथ मिलकर, हम इनोवेटिव टेक-इनेबल्ड समाधान विकसित करने की दिशा में काम कर रहे हैं, जिससे पूरे भारत में महिलाओं को सशक्त बनाया जा सके और एक अधिक समावेशी और समान भविष्य की ओर कदम बढ़ाया जा सके। एचएसबीसी ग्लोबल सर्विस सेंटर्स, इंडिया की प्रमुख, ममता मदिरेड्डी ने कहा, एचएसबीसी में समावेशन (इन्क्लूज़न) हमारी पहचान है, और हम इसे समग्र रूप से अपनाते हैं। हम अपने ग्राहकों, कर्मचारियों और जिन समुदायों में काम करते हैं, वहाँ हमारी कोशिश यही रहती है कि एक समावेशी माहौल तैयार कर सकें। मेरा मानना है कि विकास सशक्तिकरण से आता है। यदि महिला उद्यमियों को अपने कारोबार को आगे बढ़ाना है, तो तकनीक उनकी सबसे बड़ी सहयोगी होगी। यह उन्हें आगे बढ़ने, अपनी उद्यमशीलता क्षमताओं को निखारने और सीमाओं से परे जाने का अवसर देगी। नैसकॉम फाउंडेशन के साथ हमारी साझेदारी के तहत टेक फॉर गुड इस पहल के प्रभाव को और बढ़ाएगा, जिससे समुदाय की वंचित महिलाओं के लिए एक समावेशी मंच तैयार किया जा सके।

हितेश को स्वर्ण, भारत ने 6 पदकों के साथ समाप्त किया अभियान

फोज डू इगुआकु (ब्राजील)(एजेंसी)। भारतीय मुक्केबाजी दल ने विश्व मुक्केबाजी द्वारा आयोजित एलीट स्तर की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में अपने पहले प्रदर्शन में प्रभावशाली प्रदर्शन किया, जिसमें फोज डू इगुआकु में विश्व मुक्केबाजी कप ब्राजील 2025 में एक स्वर्ण और एक रजत सहित छह पदक जीते। हितेश विश्व मुक्केबाजी कप में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय मुक्केबाज बन गए। उनके प्रतिद्वंद्वी, इंग्लैंड के ओडेल कामारा घायल हो गए और 70 किग्रा के फाइनल में रिंग में नहीं उतर सके। 65 किग्रा वर्ग में फाइनल में पहुंचने वाले अन्य भारतीय मुक्केबाज अभिनाश जामवाल ने स्थानीय पसंदीदा यूरी रीस के खिलाफ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया, लेकिन अनुकूल फैसला पाने के लिए पर्याप्त प्रदर्शन नहीं कर सके और रजत पदक जीता। चार भारतीय खिलाड़ियों ने कांस्य पदक जीते, जिनमें जदुमणि सिंह मंडेंगबाम (50 किग्रा), मनीष राठौर (55 किग्रा), सचिन (60 किग्रा) और विशाल (90 किग्रा) शामिल हैं। विश्व मुक्केबाजी कप में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय मुक्केबाज बनने के बाद हितेश ने टूर्नामेंट से पहले ब्राजील में 10 दिवसीय तैयारी शिविर का श्रेय दिया, जिससे उन्हें और टीम को काफी मदद मिली। हितेश ने कहा, शिविर ने मुझे कुछ सामरिक बारीकियां सीखने में मदद की, जिससे मुझे प्रतियोगिता में काफी मदद मिली। इस टूर्नामेंट ने हमें उच्चतम स्तर पर शानदार प्रदर्शन करने का मौका दिया और मुझे खुशी है कि मैं स्वर्ण पदक जीत सका। भारत ने पेरिस ओलंपिक के बाद अपने पहले बड़े अंतरराष्ट्रीय आयोजन, विश्व मुक्केबाजी कप के लिए 10 सदस्यीय दल उतारा था और छह पदक जीते। इससे न केवल टीम का आत्मविश्वास बढ़ेगा, बल्कि लॉस एंजेलिस खेलों से पहले 2028 ओलंपिक चक्र की तैयारी भी शुरू होगी।

संजू सैमसन ने रचा इतिहास, राजस्थान रॉयल्स के लिए हासिल की बड़ी उपलब्धि

मुल्लानपुर(एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स ने महाराजा यादवेंद्र सिंह इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम, मुल्लानपुर में इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के 18वें मैच में पंजाब किंग्स को 50 रनों से हरा दिया. फ्रैंचाइजी के लिए पहले 3 मैचों में केवल बल्लेबाज के रूप में खेलने के बाद संजू सैमसन ने इस मैच से इस सीजन में फिर से कप्तानी शुरू की और रियान पराग स्टैंड-इन कप्तान थे. अपने पहले ही मैच में, सैमसन ने रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज करा लिया, वे इंडियन प्रीमियर लीग में राजस्थान रॉयल्स के लिए सबसे ज़्यादा जीत हासिल करने वाले कप्तान बन गए. सैमसन पहले 3 मैचों में बल्लेबाज और इम्पैक्ट सब्सटीट्यूट के रूप में खेल रहे थे, लेकिन बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस से विकेटकीपिंग की मंजूरी मिलने के बाद उन्होंने पीबीकेएस के खिलाफ कप्तानी संभाली और विकेटकीपिंग भी की. 2021 से टीम की अगुआई करने के बाद से सैमसन की यह 32वीं जीत थी. उन्होंने अपनी कप्तानी में 32 मैच जीते हैं, 29 हारे हैं और एक मैच बेनतीजा रहा है. उन्होंने 2022 में आरआर को फाइनल में पहुंचाया, जहां वे गुजरात टाइटन्स से खिताबी मुकाबला हार गए. उनकी कप्तानी में 2024 के आईपीएल संस्करण में राजस्थान की टीम प्लेऑफ में पहुंची. पंजाब किंग्स के कप्तान श्रेयस अय्यर ने टॉस जीतकर राजस्थान रॉयल्स को बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया. आरआर के लिए यशस्वी जायसवाल ने 67 रनों की तूफानी पारी खेली, जबकि रियान पराग ने नाबाद 43 रन बनाए. लॉकी फर्ग्यूसन ने पीबीकेएस के लिए दो विकेट चटकाए और राजस्थान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए स्कोरबोर्ड पर (205/4) का स्कोर बनाया.

पंजाब किंग्स को राजस्थान रॉयल्स 50 रनों से हराया, यशस्वी ने जड़ा अर्धशतक

आर्चर ने झटके 3 विकेट

मुल्लांपुर(एजेंसी)। आईपीएल 2025 के 18वें मैच में राजस्थान रॉयल्स ने पंजाब किंग्स को उन्हीं के घर में 50 रनों से हरा दिया है. राजस्थान की टीम ने पंजाब के मोहाली स्थित मुल्लांपुर क्रिकेट स्टेडियम में पहले बल्लेबाजी करते हुए यशस्वी जायसवाल की अर्धशतकीय पारी की बदौलत 205 रन बनाए. पंजाब की टीम जीत के लिए मिले 206 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 155 रन ही बना पाई और 50 रनों से मैच हार गई. यह पंजाब की तीसरे मैच में पहली हार है, जबकि राजस्थान की चौथे मैच में दूसरी जीत है. पंजाब किंग्स की टीम 206 रनों का पीछा नहीं कर पाई लेकिन नेहाल वढेरा ने शानदार अर्धशतकीय पारी खेली लेकिन वह अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाए. उन्होंने नंबर 5 पर आकर 41 बॉल में 4 चौके और 3 छक्कों के साथ 62 रनों की पारी खेली और प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड हासिल किया. उनके अलावा 21 बॉल में 4 चौके और 1 छक्के के साथ 30 रनों की पारी खेली. इन दोनों के अलावा अन्य कोई बल्लेबाज बड़ी पारी नहीं खेल पाया और टीम को इस सीजन में तीसरे मैच में अपनी पहली हार का सामना करना पड़ गया. राजस्थान के लिए जोफ्रा आर्चर ने 4 ओवर में 25 रन देकर 3 विकेट हासिल किए. इसके अलावा महेश तीक्षणा और संदीप सिंह ने 2-2 विकेट अपने नाम किए, जबकि कुमार कार्तिकेय और वानिंदु हसरंगा को 1-1 विकेट मिला. इससे पहले राजस्थान रॉयल्स के लिए पारी की शुरुआत यशस्वी जायसवाल और कप्तान संजू सैमसन ने की और दोनों ने पहले विकेट के लिए 89 रनों जोड़े.

मुंबई इंडियंस फैंस के लिए बड़ी खुशखबरी, बूम-बूम बुमराह टीम से जुड़े

आरसीबी के खिलाफ कल खेलेंगे?

मुंबई(एजेंसी)। आईपीएल 2025 में अपनी टीम के खराब प्रदर्शन के निराश मुंबई इंडियंस फैंस के लिए रविवार को एक बड़ी खुशखबरी आई है. एमआई कैंप में जसप्रीत बुमराह की बहुप्रतीक्षित वापसी आखिरकार पूरी हो गई है. फ्रेंचाइजी ने सोशल मीडिया के जरिए यह बड़ी खबर शेयर की है जो उनकी टीम और फैंस का मनोबल बढ़ाएगी. मुंबई इंडियंस के दाएं हाथ के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह 7 अप्रैल को मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में चिर-प्रतिद्वंद्वी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ होने वाले मैच से पहले टीम में शामिल हो गए हैं. मुंबई इंडियंस ने अपने ऑफिशियल एक्स अकाउंट से बुमराह का एक स्पेशन वीडियो शेयर करते हुए उनकी टीम में वापसी की घोषणा की. वीडियो को रेडी टू रोअर कैप्शन के साथ पोस्ट किया गया. जिसमें बुमराह को शेर के रूप में दर्शाया गया है और कहा है कि शेर जंगल में दहाड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार है. बता दें कि, जसप्रीत बुमराह को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिडनी टेस्ट में पीठ में समस्या हुई थी. वह जनवरी की शुरुआत से ही मैदान से बाहर हैं. रिहैब के लिए बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई) में थोड़े समय के लिए रहने के बाद अब बुमराह मैदान पर वापसी करने के लिए तैयार हैं. भारतीय तेज गेंदबाज ने इस सीजन में फ्रेंचाइजी के लिए किसी भी मैच में हिस्सा नहीं लिया है, फैंस उनकी टीम में वापसी का बेसब्री का इंतजार कर रहे हैं. जसप्रीत बुमराह पीठ की चोट से उबरने के बाद आज ही मुंबई इंडियंस के साथ जुड़े हैं. एमआई को सोमवार, 7 अप्रैल को अपने होम ग्राउंड पर आरीसीबी के खिलाफ अहम मुकाबला खेलना है. बुमराह के अनुपलब्ध होने के कारण टीम ने अब तक 4 में से 3 गंवाए हैं. ऐसे में उम्मीद लगाई जा रही है कि बुमराह कल वानखेड़े में होने वाले मुकाबले मे खेलते हुए नजर आएंगे. हालांकि, वह खेलेंगे या नहीं ये स्पष्ट तो मैच से पहले टॉस के दौरान ही हो पाएगा. मुंबई इंडियंस ने अब तक आईपीएल 2025 में 4 मैच खेले हैं, जिसमें 3 में उसे हार मिली है और 1 मैच उसने जीता है. 5 बार की चैंपियन टीम प्वाइंट्स टेबल में फिलहाल 8वें नंबर पर है. बुमराह की गैर-मौजूदगी में ट्रेंट बोल्ट और दीपक चाहर अब तक तेज गेंदबाजी की कमान संभाल रहे थे. 2013 में मुंबई इंडियंस के लिए आईपीएल में डेब्यू करने वाले बुमराह ने 133 मैचों में 165 विकेट लिए हैं. डेब्यू के बाद से वह एकमात्र आईपीएल सीजन 2023 में नहीं खेल पाए थे, जब उन्हें पीठ में चोट लग गई थी.

सैमसंग ने भारत में गैलेक्सी टैब S10FE सीरीज लॉन्च की, कीमत 42999 रुपये से शुरू

गुरुग्राम। भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने आज Galaxy Tab S10 FE और Galaxy Tab S10 FE+ लॉन्च करने की घोषणा की। ये टैबलेट्स प्रीमियम डिजाइन के साथ गैलेक्सी इकोसिस्टम में एंट्री का एक नया और शानदार मौका देते हैं। Galaxy Tab S10 FE+ में अब तक की सबसे बड़ी स्क्रीन और पतले बेज़ल दिए गए हैं, जिससे इसका डिस्प्ले और भी बेहतर और इमर्सिव हो जाता है। यह डिवाइस मनोरंजन, पढ़ाई और रोजमर्रा के कामों के लिए शानदार व्यूइंग एक्सपीरियंस देता है। सैमसंग ने इसमें स्मार्ट फीचर्स जोड़े हैं, जिससे यूजर्स अपने काम को आसानी से और ज्यादा कुशलता से कर सकते हैं। साथ ही, इसका स्लिम डिजाइन इसे हल्का और पोर्टेबल बनाता है, ताकि आप चलते-फिरते भी अपनी क्रिएटिविटी और प्रोडक्टिविटी बनाए रख सकें। सैमसंग इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट (MX बिजनेस) आदित्य बब्बर ने कहा, सैमसंग में, हम सभी के लिए वर्ल्ड- क्लास इनोवेशन लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, और नई गैलेक्सी टैब S10 FE सीरीज इसी विजन का एक शानदार उदाहरण है। पहली बार हमारे स्नश्च टैबलेट्स में गैलेक्सी एआई क्षमताओं को शामिल किया गया है, जिससे हम एडवांस टेक्नोलॉजी को पहले से ज्यादा लोगों तक पहुंचा रहे हैं। गैलेक?सी टैब स10 स्नश्च सीरीज से यूजर्स अपनी क्रिएटिविटी और प्रोडक्टिविटी को नए स्तर पर ले जा सकेंगे, और इससे भारत के टैबलेट मार्केट में हमारी लीडरशिप और मजबूत होगी। शानदार डिस्प्ले गैलेक्सी टैब स सीरीज की विरासत को बरकरार रखते हुए, गैलेक्सी टैब S10 FE+ का 13.1-इंच डिस्प्ले पतले बेजल्स के साथ आता है, जिससे देखने का अनुभव और भी ज्यादा शानदार हो जाता है। इसकी स्क्रीन पिछले मॉडल से लगभग 12% बड़ी है, जिससे मूवी देखने और गेमिंग का मजा दोगुना हो जाता है।

इस वर्ल्ड हेल्थ डे, मुट्ठीभर कैलिफोर्निया बादाम के साथ बढ़ाएं अपनी संपूर्ण सेहत

रायपुर। हर साल 7 अप्रैल को मनाया जाने वाला वर्ल्ड हेल्थ डे यह याद दिलाता है कि अच्छी सेहत का मतलब सिर्फ लंबा जीवन नहीं, बल्कि स्वस्थ और बेहतर जीवन जीना है। इसके लिए सबसे जरूरी पहलुओं में से एक है पोषण, क्योंकि संतुलित आहार हमारी समग्र सेहत की बुनियाद है। पोषण पाने का एक आसान लेकिन असरदार तरीका है अपने रोज़मर्रा के आहार में कैलिफोर्निया बादाम जैसे पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों को शामिल करना। भारत में सबसे लोकप्रिय कैलिफोर्निया बादाम, प्रोटीन, फाइबर, हेल्दी फैट्स, मैग्नीशियम, जिंक और विटामिन ई सहित 15 जरूरी पोषक तत्वों का प्राकृतिक स्रोत हैं, जो सेहतमंद जीवनशैली का समझदारी भरा हिस्सा बन सकते हैं। मैक्स हेल्थकेयर, नई दिल्ली में रीजनल हेड, डाइटीटिक्स ऋतिका समद्दार कहती हैं, भारत में खराब खानपान और निष्क्रिय जीवनशैली की वजह से मोटापा, हृदय रोग और डायबिटीज़ बढ़ रही हैं। ऐसे में समग्र स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना और छोटे लेकिन समझदारी भरे फैसले लेना जरूरी है, जैसे बादाम, फल और सब्ज़ियाँ अपनी डाइट में शामिल करना। बादाम खासकर दिल की सेहत के लिए लाभकारी हैं, ये कोलेस्ट्रॉल को कम करने और सूजन घटाने में मदद कर सकते हैं। न्यूट्रीशन एण्ड वेलनेस कंसल्टेन्ट शीला कृष्णस्वामी ने कहा, ''इस वर्ल्ड हेल्थ डे के मौके पर भारत में बढ़ रहे मोटापे के संकट पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। इसका कारण है आलसी जीवनशैली, खान-पान की खराब आदतें और ज्यादा कार्बोहाइड्रेट वाली चीजें, जिनमें दूसरे जरूरी पोषक-तत्व नहीं होते हैं। वजन पर असरदार नियंत्रण पोषक-तत्वों से भरपूर आहार से शुरू होता है, जिसमें प्रोटीन, आहारीय फाइबर, सेहतमंद वसा और माइक्रोन्यूट्रियेंट्स हों। इसका एक आसान, लेकिन दमदार तरीका है अपने रोजाना के रुटिन में मुट्ठीभर बादाम को शामिल करना। बादाम 15 जरूरी पोषक-तत्वों से भरी होती हैं और संतुष्टि बढ़ाने, खाई जाने वाली कैलोरी को कम करने तथा वजन को नियंत्रित रखने में सहायता करती हैं। बादाम का कई तरीकों से इस्तेमाल हो सकता है और किसी भी रूप में उनका मजा लिया जा सकता है। इसलिये जब अगली बार भूख लगे, खासकर भोजन के बीच, तब सेहतमंद विकल्प के तौर पर जंक या तले फूड्स के बजाए मुट्ठीभर बादाम को आजमाएं।'' एमबीबीएस और न्यूट्रिशनिस्ट डॉ. रोहिणी पाटिल ने कहा, ''जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ बढ़ने के साथ पोषण बेहद महत्वपूर्ण हो गया है। भारत को अक्सर दुनिया का डायबिटीज कैपिटल कहा जाता है और यहाँ रोजाना ऐसे मामले बढ़ रहे हैं।

अब भारत से सीधे दुबई तक: लैक्मे एकेडमी और ल'अमोर की साझेदारी से ब्यूटी करियर को मिलेगी इंटरनेशनल उड़ान

नईदिल्ली। भारत के प्रमुख ब्यूटी ट्रेनिंग संस्थानों में से एक, लैक्मेएकेडमीपावर्डबायएप्टेकने आज दुबई स्थितल'अमोर इंस्टीट्यूट ऑफब्यूटीके साथ साझेदारी की घोषणा की है। इस पहल का उद्देश्य अपने छात्रों और सौंदर्य एवं वेलनेस क्षेत्र के भावी प्रोफेशनल्स के लिए एक्सक्लूसिव इंटरनेशनल पाथवे प्रोग्रामकी पेशकश करना है। यह प्रोग्राम दुबई के प्रमुख ब्यूटी हब में इमर्सिव प्रशिक्षण का अवसर प्रदान करेगा, जिसमें स्पेशल इफेक्ट्स मेकअप (एसएफएक्स), फेस और बॉडी पेंटिंग तथा इंटरनेशनल ब्राइडल टेक्निक जैसे मॉड्यूल शामिल हैं। दुबई की विविधतापूर्ण सौंदर्य दुनिया से परिचय कराने के साथ ही यह कार्यक्रम छात्रों को लैक्मे एकेडमी पावर्ड बाय एप्टेक और ल'अमोर इंस्टीट्यूट के विशेषज्ञों से प्रशिक्षण लेने का अवसर देगा। इससे न केवल उनका पोर्टफोलियो सशक्त होगा, बल्कि वेग्लोबल ब्राइडल आर्टिस्ट, एसएफएक्स स्पेशलिस्ट या ब्यूटी ऑन्त्र प्रेन्योर जैसे हाई-प्रोफाइल करियर के लिए खुद को तैयार भी कर सकेंगे।

पात्रता: यह कार्यक्रम लैक्मे एकेडमी केएडवांस मेकअप, कॉस्मेटोलॉजीऔरग्लोबल ट्रेंड्सके छात्रों, अन्य संस्थानों से प्रमाणित ब्यूटी प्रोफेशनल्स तथा ब्यूटी और वेलनेस क्षेत्र से जुड़े उन सभी इच्छुकों के लिए खुला है, जिनके पास इस क्षेत्र की उन्नत जानकारी और तकनीकी दक्षता है।

करियर के लिए अपार संभावनाएं- यह प्रोग्राम छात्रों को इंडस्ट्री-रेडी प्रोफेशनल्स के रूप में तैयार करता है, जो ब्यूटी, फैशन और एंटरटेनमेंट की तेजी से बढ़ती दुनिया में उत्कृष्टता हासिल कर सकें। इसमेंएडिटोरियल लुक्स, रनवे ट्रेंड्स, औरसेलिब्रिटी स्टाइलिंगजैसे क्षेत्रों की गहन जानकारी दी जाएगी।

इंटरनेशनल ब्राइडल मेकअप विशेषज्ञता के माध्यम से छात्रडेस्टिनेशन वेडिंग्सऔर हाई-प्रोफाइल क्लाइंट्स के लिए विभिन्न सांस्कृतिक तकनीकों में माहिर बनेंगे। साथ ही, क्रिएटिव और एसएफएक्समेकअपमें गहन प्रशिक्षण उन्हेंफिल्म, टीवी, थिएटरऔरस्पेशल इफेक्ट्सके करियर के लिए तैयार करता है। भविष्य के आन्त्रप्रेन्योर इस कार्यक्रम के जरिये आवश्यक ज्ञान और आत्मविश्वास अर्जित कर सकते हैं, जिससे वेस्वतंत्र स्टूडियोसे लेकर ग्लोबल ब्रांड्सतक अपने ब्यूटी वेंचर्स की सफल शुरुआत कर सकें। संदीप वेलिंग, चीफ बिजनेस ऑफिसर, ग्लोबल रिटेल बिजनेस, एप्टेक लिमिटेड एवं ब्रांड कस्टोडियन, लैक्मे एकेडमी ने कहा, यह कार्यक्रम सिर्फएक कोर्स नहीं, बल्कि उन छात्रों के लिए लॉन्चपैड है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर करियर बनाना चाहते हैं।

दैनिक
विश्व परिवार महानगर
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
रायपुर, मंगलवार 08 अप्रैल 2025

समपार फाटक सं. 393 (केसदा गेट) स्थाई रूप बंद

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर मंडल के अंतर्गत मुंबई- हावड़ा मुख्य मार्ग पर तिल्दा- हथबंद रायपुर रेल मंडल स्टेशनों के मध्य किमी.- 784/4 - 6 समपार फाटक संख्या 393 केसदा गेट स्थित है जहां किमी. 784/2- 4 में आर. यू. बी (रोड अंडर ब्रिज) का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है एवं आमजनों के आवागमन के लिए चालू कर दिया गया है। अतः किमी. 784/4 - 6 में स्थित समपार फाटक संख्या- 393 (केसदा गेट) को स्थाई रूप से बंद किया जाता है।

काविड़िया (जैन) परिवार में विवाहोत्सव

चि. सफल संग सौ. साक्षी का शुभ विवाह सानंद सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। शहर के लब्ध प्रतिष्ठित समाजसेवी, छत्तीसगढ़ नि:शक्तजनवित्त एवं विकास निगम के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री लोकेश काविड़िया- श्रीमती सुश्री लाकावड़िया के सुपुत्र चि. सफल का दुर्ग निवासी श्री मनीष दुग्गड़-श्रीमती वर्षा दुग्गड़ की सुपुत्री सौ. साक्षी के साथ मंगल परिणयोत्सव दिनांक 06 अप्रैल, रविवार को रायपुर एयरपोर्ट के सामने स्थित जैनम मानस भवन में सानंद संपन्न हुआ। शुभ विवाह के उपरांत आयोजित भव्य आशीर्वाद समारोह में नव युगल को सगे संबंधियों, समाजसेवी जनो, राजनेताओं, इष्टमित्रों ने शुभकामनाएं भेंट की।

सभी आगतजनो का स्वागत डॉ. निर्मला जैन, श्री लोकेश-श्रीमती सुशीला काविड़िया, डॉ. जयेश-श्रीमती शशि काविड़िया, डॉ. कर्तव्य-डॉ. पारूल काविड़िया, श्रीमती योगा-श्री धर्णेंद्र, श्रीमती मेघा-श्री अमित, डॉ.यात्रा-डॉ.हर्ष एवं समस्त काविड़िया (जैन) परिवार ने किया। दैनिक विश्व परिवार नवदंपति के यशस्वी, सुमंगल, सुदीर्घ जीवन की मंगलकामना करता है।

जैन साधु-संतो की सुरक्षा के लिए अनूठा प्रयास, श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला शाखा ने वाहन चालको को दिया सुरक्षा का संदेश

रायपुर (विश्व परिवार)। सर्व विदित है की जैन समुदाय में सभी पंथों के साधु साध्वी एक स्थान से दूसरे स्थान या एक शहर से दूसरे शहर जाने के लिए पद विहार ही करते हैं वह किसी वाहन आदि का प्रयोग नहीं करते, इस दौरान सड़क पर तेज गति से चलने वाले वाहन कभी-कभी अनियंत्रित होने के कारण या चालकों द्वारा अविवेकपूर्ण ढंग से संचालन के कारण, साधु संतो की जान जोखिम में आ जाती है यहां तक की कभी-कभी तो वे तीव्र वाहनों की चपेट में आकर अकाल मरण को भी प्राप्त हो जाते हैं।

भगवान महावीर स्वामी के 2624 वे जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति (छत्तीसगढ़ अंचल) रायपुर के तत्वाधान में जैन समुदाय के साधु साध्वियों की सुरक्षा के लिए विशेष अभियान चलाया गया। महासमिति महिला शाखा की अध्यक्षा श्रीमती जया जैन के नेतृत्व में अपनी महिला विंग एवं साथियों के योगदान से आज संतों के विहार में सुरक्षा के लिए चलाये गए विशेष अभियान का संचालन रविवार दोपहर 3 बजे रायपुर कुम्हारी स्थित टोल प्लाजा में किया, जिसमें जैन साधु महाराज एवं साध्वी जी के पद विहार में बढ़ती दुर्घटना को देखते हुए ट्रक ड्राइवरों एवं भारी वाहनों के ड्राइवरों को नशा ना करने

एवं नियंत्रित गति से वाहनों को सावधानी पूर्वक चलाने का अनुरोध किया गया एवं तख्तियों के माध्यम से साधु भगवंतो के विहार करने पर उनके सुरक्षा हेतु वाहन चालको को सुरक्षा संदेश भी दिया गया तथा भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक के अवसर पर सभी चालकों को मिष्ठान नमकीन आदि के डिब्बे भी वितरित किए गये।

इस आयोजन में मुख्य रूप से उपस्थित भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति के अध्यक्ष महावीर कोचर, महासचिव सिद्धार्थ डागा, कोषाध्यक्ष वीरेंद्र डागा ने महासमिति महिला शाखा के प्रयासों की भूरी भूरी प्रशंसा की।

आयोजन को सफल बनाने में मुख्य रुप से आयोजन के संयोजक श्रीमति रशिम-मुकेश जैन, श्रीमति रेखा रमेश जैन (वीतराग) श्रीमति अमिता-प्रवीण संघी, श्रीमति रेखा-रमेश जैन(कंकालीपारा), महिला महा समिति की अध्यक्षा श्रीमती जया यशवंत जैन, उपाध्यक्ष मंजू सुरेश मोदी, मेघना शैलेंद्र जैन सचिव संध्या अजित जैन कोषाध्यक्ष दीप्ति संजय जैन सतना, श्रीमति अलका जैन, ममता जैन, कविता जैन, अनिता जैन, नेहा जैन, सुनीता नायक, रूपाली पाटोदी, मयुरी जैन, मीता जैन, सौम्या जैन, विधा जैन, मेघा जैन, नीलम जैन, शिखा जैन, सिल्की जैन, सोनल जैन सुरभि जैन, शिखा जैन आदि महिला मंडल एवं पुरुष वर्ग ने बढ़ चढ़कर आयोजन को सफल बनाने में अपनी भूमिका निभाई।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों का महिला महासमिति रायपुर छत्तीसगढ़ की सचिव श्रीमती संध्या अजीत जैन ने आभार प्रकट किया। आयोजन का संचालन लोकेश चंद्रकांत जैन द्वारा किया गया।

सड़क दुर्घटना में घायलों की जान बचाने वाले गुड सेमेरिटन (नेक व्यक्ति) का एसएसपी ने किया सम्मान

सड़क दुर्घटना में घायलों की जान बचाने समाज के युवाओं को सामने आने की अपील

रायपुर (विश्व परिवार)। जिला रायपुर क्षेत्रांतर्गत गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग, राजकीय राजमार्ग एवं अन्य मार्गो में फरवरी एवं मार्च 2025 में घटित सड़क दुर्घटना के प्रकरणों में आगे बढ़कर घायलों की जान बचाने वाले 05 गुड सेमेरिटन (नेक व्यक्तियों) को प्रशस्ति पत्र एवं प्रतिक चिन्ह भेंट कर एसएसपी डॉ. लाल उमेद सिंह ने किया सम्मानित साथ ही सड़क दुर्घटना में घायलों की जान बचाने समाज के युवाओं को सामने आने की अपील।

ज्ञात हो कि माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा सड़क दुर्घटना में घायलों को त्वरित चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कर जान बचाने वाले व्यक्तियों को ''गुड सेमेरिटन'' अर्थात नेक व्यक्ति की संज्ञा देते हुए इन्हे अधिक से अधिक प्रोत्साहित व पुरस्कृत करने व गुड सेमेरिटन कानून का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने निर्देशित किया गया है जिसके तहत आज दिनांक को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रायपुर डॉ. लाल उमेद सिंह द्वारा फरवरी एवं मार्च 2025 में जिले के अलग-अलग सड़क दुर्घटना में घायलों की मदद कर उनकी जान बचाने वाले 05 गुड सेमेरिटन (नेक व्यक्तियों) को प्रशस्ति पत्र एवं

प्रतिक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया, साथ ही यातायात पुलिस के अधिकारियों को इनके सम्मान का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार के लिए शहर के रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, कलेक्टोरेट गेट एवं मरीन ड्राइव आदि प्रमुख स्थानों में होर्डिंग्स फ्लैक्स लगाने निर्देशित किया गया।

बता दें कि देश में प्रति वर्ष सड़क दुर्घटना में लगभग डेढ़ लाख लोगों की असमय मृत्यु कारित होती है, जिसका प्रमुख कारण घायलों को त्वरित चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध नही होने के कारण होता है। सड़क दुर्घटना के दौरान प्रथम 01 घण्टे का समय घायलों के लिए गोल्डन आवर होता है, इस दौरान यदि घायल व्यक्ति को किसी भी प्रकार से हास्पिटल तक पहुंचा दिया जाता है या फिर चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध करा दिया जाता है तो 90त्न मामले में घायल की जान बचाई जा सकती है। किन्तु आज के समय में अधिकांशत: व्यक्ति कानूनी लफड़े में नही पड़ने के चक्कर में घायल व्यक्ति की जान बचाने हेतु कोई उपाय नही करता, जिससे घायल व्यक्ति उपचार के अभाव में तड़प-तड़प कर घटनास्थल में ही दम तोड़ देता है। जिसे दृष्टिगत रखते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जिला रायुपर डॉ. लाल उमेद सिंह द्वारा जिले के सभी थाना प्रभारियों को निर्देशित किया है कि थाना क्षेत्र में घटित सड़क दुर्घटना में घायल को त्वरित सहायता पहुंचाने हेतु गुड सेमेरिटन का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने एवं घायल को त्वरित सहायता पहुंचाकर जान बचाने वाले गुड सेमेरिटन को प्रोत्साहित व पुरस्कृत करने हेतु उपस्थित कराने निर्देशित किया गया है।

प्री बीएड एवं प्री डीएलएड प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन आमंत्रित

अभ्यर्थी 25 अप्रैल 2025 तक कर सकते हैं आवेदन

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ व्यवसायिक परीक्षा मण्डल द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 में प्री बीएड एवं प्री डीएलएड प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन आमंत्रित की गई है। इसके लिए व्यापम द्वारा अभ्यार्थियों से ऑनलाईन आवेदन की तिथि निर्धारित की गई है। प्री बीएड एवं प्री डीएलएड प्रवेश परीक्षा के लिए ऑनलाईन आवेदन की प्रारंभिक तिथि 28 मार्च से शुरू हो गई है। प्री बीएड एवं प्री डीएलएड में इच्छुक अभ्यार्थी 25 अप्रैल 2025 तक शाम 5ः00 बजे तक इसके लिए आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए त्रुटि सुधार की तिथि 26 अप्रैल से 28 अप्रैल शाम 5:00 बजे तक तय किया गया है। व्यापम द्वारा प्री बीएड एवं प्री डीएलएड प्रवेश परीक्षाओं की संभावित तिथि 22 अप्रैल 2025 निर्धारित किया गया है। परीक्षा प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों में आयोजित किया जाएगा। अभ्यर्थी इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए व्यापम की वेबसाईट https://vyapamcg.cgstate.gov.in/ पर अवलोकन कर सकते हैं।

तीनों पॉवर कंपनियों में 213 पदोन्नतियां

सी एस पी जी सी एल CSPGCL

CSPDCL छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड

CSPTCL छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी लिमिटेड

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज में बीते तीन महीने में 213 अधिकारियों-कर्मचारियों की पदोन्नति आदेश जारी किये गए हैं। इसमें प्रथम एवं द्वितीय वर्ग के 13 अधिकारी तथा तृतीय व चतुर्थ वर्ग के 200 अधिकारी-कर्मचारी शामिल हैं। कंपनी प्रबंधन ने क्षेत्रीय कार्यालयों को भी निर्देश दिए हैं कि पात्रतानुसार विद्युत कर्मियों के पदोन्नति आदेश शीघ्र जारी किये जाएं।

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज़ के अध्यक्षद्वय श्री सुबोध कुमार सिंह एवं डॉ. रोहित यादव तथा प्रबंध निदेशक श्री आरके शुक्ला, श्री भीमसिंह कंवर एवं श्री एसके कटियार ने सभी अधिकारी-कर्मचारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने पदोन्नत अधिकारी-कर्मचारियों को आह्वान किया है कि वे अपनी पूरी क्षमता, लगन और निष्ठा के साथ प्रदेश के विद्युत विकास में अपनी भागीदारी दें। समर्पण के साथ उपभोक्ताओं को संतुष्ट करें। उन्होंने कहा कि पॉवर कंपनी अपने कर्मियों के सर्वांगीण विकास के लिए कृतसंकल्पित है। इसी दिशा में उन्हें स्वास्थ्य सुरक्षा से लेकर सम्मान और पदोन्नति जैसे अवसर पूरी पारदर्शिता के साथ प्रदान किए जाते हैं। उन्होंने तीनों कंपनी के मानव संसाधन विभाग और क्षेत्रीय कार्यालयों को पदोन्नति के कार्य को तीव्र गति से पूरा करने पर बधाई दी और उम्मीद जताई की बचे हुए पदों पर भी शीघ्र पदोन्नति प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी।

ट्रांसमिशन कंपनी के मानव संसाधन विभाग से सहायक अभियंता, कार्यपालन अभियंता, अधीक्षण अभियंता, अतिरिक्त मुख्य अभियंता, मुख्य अभियंता और कार्यपालक निदेशक के पदोन्नति आदेश जारी किये जाते हैं, जिनमें अभियंता (कॉमन) कैडर के ट्रांसमिशन-डिस्ट्रीब्यूशन व सिविल संकाय के 11 अधिकारियों के पदोन्नति आदेश जारी किये गए हैं। इसमें कार्यपालक निदेशक के तीन व मुख्य अभियंता के पांच तथा अधीक्षण अभियंता के तीन अधिकारियों को पदोन्नति प्राप्त हुई है। जनरेशन कंपनी से दो मुख्य अभियंताओं को कार्यपालक निदेशक के पद पर पदोन्नत किया गया है।

इसी तरह तृतीय व चतुर्थ वर्ग की पदोन्नति तीनों कंपनी के मानव संसाधन विंग के अलावा क्षेत्रीय कार्यालय से किया जाता है। इसमें तृतीय व चतुर्थ वर्ग के सबसे अधिक 200 कर्मियों को पदोन्नति प्रदान की गई है। ट्रांसमिशन कंपनी लाइन अटेंडेंट ग्रेड एक के पद पर 22, टेस्टिंग अटेडेंट ग्रेड-एक पर 48 तथा ऑफिस अटेंडेस एवंदफ्तरी के एक-एक पद पर पदोन्नति प्रदान की गई है। वहीं डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी मुख्यालय में सेक्शन ऑफिसर के पद पर 28 कर्मियों को पदोन्नत किया गया है।

इसी तरह डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी में लाइन अटेंडेंट एक के पद पर राजनांदगांव रीजन में 13 व दुर्ग रीजन में 19 कर्मियों की पदोन्नति की गई है। लाइन असिस्टेंट ग्रेड दो के पद पर राजनांदगांव में 48 कर्मियों को पदोन्नति प्रदान की गई है।

पात्र हितग्राहियों को समय पर उपलब्ध हो राशन सामग्री: मंत्री दयालदास बघेल

रायपुर (विश्व परिवार)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री दयालदास बघेल ने आज यहां मंत्रालय महानदी भवन स्थित अपने कक्ष में विभागीय काम-काज की समीक्षा की। मंत्री श्री बघेल ने विभागीय अधिकारियों को विभिन्न श्रेणियों के कार्ड धारकों को निर्धारित पात्रता के अनुसार समय पर सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत खाद्यान्न सामग्री उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। बैठक में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत राशन सामग्री के आबंटन, भण्डारण एवं वितरण तथा धान उपार्जन एवं कस्टम मिलिंग की विस्तार से समीक्षा की गई। मंत्री श्री बघेल ने उचित मूल्य की दुकानों का जल्द भौतिक सत्यापन के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सत्यापन के बाद दुकानों में पायी गई कमी, वसूली एवं दर्ज प्रकरणों का निराकरण शीघ्रता से करने के निर्देश दिए। श्री बघेल ने प्रदेश के सुदूर एवं पहुंच विहीन इलाकों की उचित मूल्य की दुकानों में अग्रिम खाद्यान्न भण्डारण हेतु समय रहते पर्याप्त भण्डारण करने के निर्देश दिए।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने की 444 दिनों की अवधि के साथ 7.15 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से 'बॉब स्क्वायर ड्राइव जमा योजना' की शुरुआत

बॉब स्क्वायर ड्राइव जमा योजना सामान्य नागरिकों के लिए 7.15 प्रतिशत प्रति वर्ष; वरिष्ठ नागरिकों के लिए 7.65 प्रतिशत प्रति वर्ष; अति वरिष्ठ नागरिकों के लिए 7.75 प्रतिशत प्रति वर्ष तथा समय-पूर्व अदेय जमाराशियों पर 7.80 प्रतिशत प्रति वर्ष तक ब्याज प्रदान करती है।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के अग्रणी बैंकों में से एक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने आज एक नई रिटेल सावधि जमा योजना- 'बॉब स्क्वायर ड्राइव जमा योजना' आरंभकिए जाने की घोषणा की। 444-दिवसीय यह सावधि जमा योजना आम जनता के लिए 7.15 प्रतिशत प्रति वर्ष, वरिष्ठ नागरिकों के लिए 7.65 प्रतिशत प्रति वर्ष, अति वरिष्ठ नागरिकों (80 वर्ष या उससे अधिक आयु के) के लिए 7.75 प्रतिशत प्रति वर्ष तथा समय-पूर्व अदेय जमा राशियों पर 7.80 प्रतिशत प्रति वर्षतक ब्याज दर प्रदान करती है। यह योजना 7 अप्रैल, 2025 से शुरू होगी तथा 3 करोड़ रुपये से कम की रिटेल सावधि जमाराशियों पर लागू होगी।

07.04.2025 से प्रभावी बॉब स्क्वायर ड्राइव जमा योजना

अवधि	समय-पूर्व देय: निवासी/सामान्य जनता/एनआरओ/एनआरई	समय-पूर्व देय: निवासी वरिष्ठ नागरिक	समय-पूर्व देय: निवासी अति वरिष्ठ नागरिक	समय-पूर्व अदेय (1 करोड़ रुपये से अधिक से लेकर 3 करोड़ रुपये से कम तक की जमाराशियां): निवासी/सामान्य जनता/एनआरओ/एनआरई	समय-पूर्व अदेय: निवासी वरिष्ठ नागरिक	समय-पूर्व अदेय: निवासी अति वरिष्ठ नागरिक
444 दिन	7.15% प्रति वर्ष	7.65% प्रति वर्ष (7.15+0.50)	7.75% प्रति वर्ष (7.15+0.50+0.10)	7.20% प्रति वर्ष (7.15+0.05)	7.70% प्रति वर्ष (7.20+0.50)	7.80% प्रति वर्ष (7.20+0.50+0.10)

सुश्री बीना वाहिद, कार्यपालक निदेशक, बैंक ऑफ़ बड़ौदाने कहा कि ब्याज दरों में गिरावट के दौर में, 'बॉब स्क्वायर ड्राइव जमा योजना' जमाकर्ताओं को उच्च ब्याज दरों को लॉक करने तथा अपनी बचत पर स्थिर और सुनिश्चित रिटर्न अर्जित करने का एक आकर्षक विकल्प प्रदान करती है। बैंक ऑफ़ बड़ौदा अपने ग्राहकों के वृद्धिशील वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने के लिए उपयुक्त समाधान प्रदान करने हेतु अपनी जमा पेशकशों में लगातार नवोन्मेषीउत्पाद लेकर आ रहा है।

ग्राहक बैंक के डिजिटल चैनलों जैसे बॉब वर्ल्ड ऐप और बैंक के इंटरनेट बैंकिंग प्लेटफॉर्म के साथ-साथ बैंक ऑफ़ बड़ौदा की किसी भी शाखा के माध्यम से सावधि जमा खाता खोल सकते हैं।

इसके अलावा, बैंक के नए ग्राहक अब बैंक ऑफ़ बड़ौदा की वेबसाइट के माध्यम सेबचत खाता खोले बिनाभी वीडियो केवाईसी द्वारा बैंक के साथ एफडी खाता खोल सकते हैं। 'बॉब स्क्वायर ड्राइव जमा योजना' के बारे में अधिक जानकारी के लिए, यहां क्लिक करें।

आईपीएस सह महानिदेशक रेलवे सुरक्षा बल रेलवे बोर्ड नई दिल्ली द्वारा उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य के लिए प्रतीक चिन्ह और प्रशस्ति पत्र

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री मनोज यादव, आई.पी.एस सह महानिदेशक रेलवे सुरक्षा बल रेलवे बोर्ड नई दिल्ली के द्वारा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर मंडल मे कार्यरत सहायक उपनिरीक्षक दिनेश कुमार खोबरागड़ें, प्रधान आरक्षक शाहिद मोहम्मद को सेवाकॉल मे उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य के लिए महानिदेशक प्रतीक चिन्ह और प्रशस्ति पत्र से एवं प्रधान आरक्षक आर.के.जांगड़े तिल्दा को प्रशंसनीय कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। दिनांक 07.04.2025 को श्री रमन कुमार वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त, रेलवे सुरक्षा बल रायपुर के द्वारा उपरोक्त बल अधिकारी व बल सदस्यो को मेडल पहनाकर और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान श्री वी.के.लांजीवार सहायक सुरक्षा आयुक्त रायपुर, श्री एस. दत्ता निरीक्षक रायपुर, श्री ए.के. बारले निरीक्षक शिविरपाल, श्रीमति उषा निरीक्षक यात्री सुरक्षा उपस्थित थे। इस दौरान उपस्थित सभी साथी अधिकारी व बल सदस्यों ने इसके लिए शुभकामनाये प्रदान की है। यह दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर मंडल के लिए गौरवान्वित करने का अवसर है।

CRPF कैंप में मना विश्व स्वास्थ्य दिवस, बढ़ते हार्ट अटेक पर डाक्टरों ने जताई चिंता

नशापान, अनिद्रा और स्ट्रेस है हार्ट अटेक का प्रमुख कारण

आरंग (विश्व परिवार)। सोमवार को विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर सीआरपीएफ कैंप भिलाई में विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। जिसमें बड़ी संख्या में सीआरपीएफ कैंप भिलाई के डाक्टर व सैनिकगण शामिल हुए।इस मौके पर डीआईजी मेडिकल दुर्गा राजनाला ने सभा को संबोधित करते हुए कहा- लोगों को स्वास्थ्य के प्रति सचेत करने प्रतिवर्ष सात अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है।इस वर्ष का थीम हेल्दी बिगनिंग, होपफूल फ्यूचर्स है।जिसका अर्थ है स्वस्थ शुरुआत, आशाजनक भविष्य। उन्होंने दार्शनिक अंदाज में कहा जब जननी स्वस्थ होंगी, तब स्वस्थ शिशु जन्म लेंगे और जब शिशु स्वस्थ होंगे तो उनका भविष्य उज्जवल होगा।इसलिए

सभी को बेहतर स्वास्थ्य के प्रति सचेत और जागरूक होना आवश्यक है। साथ ही सभी गर्भवती माताओं को अपने खान-पान और जीवनशैली का विशेष रूप से ध्यान रखने को कहा। जिससे कि स्वस्थ शिशु का जन्म हो। वही सुयस हास्पीटल रायपुर से डाक्टर तृप्ति तालापात्रा सीटीवीएस सर्जन ने संबोधित करते हुए बढ़ते हार्ट डिसीज पर चिंता जताई। उन्होंने पीपीटी के माध्यम से हार्ट अटेक के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताई बदलती जीवनशैली, फास्ट-फूड का सेवन, नशापान, अनिद्रा, हाइपर टेंशन, एयर पाल्यूशन, फैमली हिस्ट्री आदि हार्ट अटेक का प्रमुख कारण है। इसके बचने के लिए फास्ट-फूड खाने से बचना, पर्याप्त नींद, मेडीटेशन, व्यायाम के साथ साथ बीच बीच में स्वास्थ्य जांच कराते रहने को कहा।कार्यक्रम का संचालन डाक्टर राजेश गर्ग व आभार प्रदर्शन डिप्टी कमांडेंट अजय कुमार ने किया।इस अवसर पर डाक्टर मनीषा गर्ग, डाक्टर इंदु वशिष्ठ, डाक्टर तनिंदर, डाक्टर शालिनी, डाक्टर मोहित, डीसी प्रिया राजन गुप्ता, एसी राजा कुमार सहित बड़ी संख्या में हास्पीटल स्टाफ व सीआरपीएफ के सैनिकगण उपस्थित थे।

ITR फाइल 500/-

Whatsapp पर बनवाऐं

Income Tax फाइल, GST रजिस्ट्रेशन, TDS रिफंड, प्रोजेक्ट रिपोर्ट

CMA DATA, MSME, BALANCE SHEET, फूड लाइसेंस

हमारे Tax Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।

सम्पर्क - शेखर गुप्ता www.onlytds.com 9300755544 - 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354